समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• अक्तूबर २०२३ • वर्ष ७४ • अंक १०

मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

'सामाजिक परिवर्तन और आज की चुनौतियाँ' विषय पर संगोष्ठी

१६ अक्तूबर २०२३; सम्मेलन सभागार में 'सामाजिक परिवर्तन और आज की चुनौतियाँ' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ। चित्र में परिलक्षित हैं - राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिव कुमार लोहिया, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ, निवर्तमान उपाध्यक्ष श्री भानीराम सुरेका, राष्ट्रीय महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री द्वय श्री पवन कुमार जालान, श्री संजय गोयनका, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री केदार नाथ गुप्ता, प्रबुद्ध चिंतक एवं साहित्यकार प्रधान वक्ता डॉ. अलका सरावगी, फाइनेंस कमेटी के चेयरमैन श्री आत्माराम सोन्थलिया, डॉ. विजय केजरीवाल, डॉ. बाबूलाल शर्मा, सर्वश्री जुगल किशोर जाजोदिया, सुरेश अगरवाल, सांवरमल शर्मा, विनोद टेकरीवाल, महाबीर प्रसाद मनकसिया, विजय कानोड़िया, रघुनाथ झुनझुनवाला, बसंत सेठिया, पवन जैन, पुरुषोत्तम अग्रवाल, अमित मूंधड़ा, संपत बरमेचा, अनिल मल्लावत, पवन बंसल, नंदकिशोर अग्रवाल, हर्ष कुमार शर्मा, शशि कांत साह, विश्वनाथ भुवालका, सुभाष चंद्र गोयनका, गोपाल पित्ती, शरद श्रॉफ, सज्जन बेरीवाल, रमेश बूबना, नवीन गोपालिका, सुश्री नैना मोरे, श्री मुन्ना सुल्तानिया एवं अन्य सदस्य।

नवरात्रि, दुर्गापूजा एवं दशहरा

की

हार्दिक शुभकामनाएँ!

बधाई!

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नव-निर्वाचित अध्यक्ष

श्री नंदकिशोर अग्रवाल

इस अंक में

संपादकीय

हमारी संस्कृति - हमारी विरासत

आपणी बात

आइए, परिवार में मायड़ भाषा के प्रयोग का संकल्प लें!

रपट

'सामाजिक परिवर्तन और आज की चुनौतियाँ' विषय पर संगोष्ठी उपसमिति की बैठक

विशेष

दस्तावेज

इतिहास के पन्नों से

प्रादेशिक समाचार

उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पूर्वोत्तर सिक्किम, आंध्र प्रदेश

कविता

मुस्कानो जरूरी है

खा'र पहाड़ मारो दहाड़

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED (RKFL) is India's Second biggest and leading Integrated Forging cum Machining Company. RKFL have Closed Die Forging Hammers, Upsetters, Ring Rolling & Press Lines from 2000 to 12500 Tons. RKFL is a supplier of major OEM's, Tier 1, suppliers globally for Automotive, Mining, Earth Moving, Oil & Gas, Railways and General Engineering Industries.

The Company is accredited with IATF 16949, ISO 14001 (EMS), OSHAS 18001, AS9100D and Testing Laboratories are NABL accredited (ISO/IEC 17025:2005). Its Corporate Office is located is Kolkata & Facilities are in Jamshedpur.

RKFL's product is exported to North America, South America, Europe, Australia, UK, Turkey and Asian Countries.

Regd. & Corporate Office:

23, Circus Avenue, 9th Floor,
Kolkata – 700 017, West Bengal, India.
Office phone : +(91) 033 4082 0900 / 7122 0900
Email – info@ramkrishnaforgings.com
Web site – www.ramkrishnaforgings.com

Overseas Office at:

Detroit-USA, Toluca-Mexico, Istanbul-Turkey.

Plants at:

Plant I, III, IV, V, VI & VII at Jamshedpur, India
Plant: II at Liluah, Howrah, India

Perfectly styled weddings

Showcasing a collection of impeccably styled ceremonial suits, that add a sense of style and sophistication to your wedding look. This collection is a true testament to redefining suits for weddings, crafted in multiple hues, distinctive silhouettes and fine detail. Because no wedding wardrobe is complete without a well-tailored suit.

THE Raymond SHOP

7/1A, Lindsay Street
✆22174978/22174980/9331046462

21, Camac Street
✆22837933/40629259/9007104378

Use Green Products & Increase Green Building Rating Points

HINDCON CHEMICALS LTD.

STRENGTH UPON STRENGTH

Manufacturers of:

CONSTRUCTION CHEMICALS
SPECIALITY CHEMICALS
SODIUM SILICATE

PROTECTIVE & WATERPROOFING COATINGS, SHEETINGS EXPANSION & CONTRACTION JOINT SYSTEM | CONCRETE & MORTAR ADMIXTURES | REMOVER/CLEANING COMPOUNDS WATER PROOFING COMPOUNDS | GROUTS & REPAIRING MORTARS CEMENT ADDITIVES | EPOXY GROUTS & MORTARS | REHABILITATION COATING IMPREGNATION | CONCRETING AIDS | SHOT CRETE AIDS FLOOR TOPPINGS | TILE ADHESIVE | FOUNDRY AID | SEALANTS | WATERPROOFING | JOB WORK

- **Kolkata :** Nest Constructors +91 9831075782
- **Midnapore :** New S.A. Sanitary +91 8016933523
- **Mursidabad :** Bharat Congee +91 7047628386
- **Siliguri :** Subhojit Ghosh +91 9836367567
  Bhawani Enterprise +91 7584983222
- **South 24 Pgs :** M.M. Enterprise +91 9051449377
- **Nadia :** NPR Enterprise +91 9775174923
- **Purulia :** Netai Chandra Son & Grand Sons +91 9775154544
- **Bankura :** Amit Enterprise +91 8972945781
- **Arambagh :** Maa Manasa Trading +91 9647673010
- **Hooghly :** Sen Enterprise +91 7908528482
- **Birbhum :** K.D. Enterprise +91 9434132114
- **Bhubaneswar :** Santosh Nayak +91 8895677677
- **Chennai :** Five Star Associates +91 9962591145
- **Delhi :** Debasis De +91 9836174567
- **Gujarat :** Ujjwal Chanchal +91 9142501353
- **Guwahati :** Manik Dey +91 9864824344
- **Himachal Pradesh :** Rajan Sharma +91 9830286567
- **Karnataka :** Akshaya Enterprise-9902019244
- **Madhya Pradesh :** Kanha Trading Co. +91 9630732585
  Om Shree Sai Trader +91 8077185201
- **Navi Mumbai :** Paresh Ashra, +91 9967658832, 9322591244
- **Patna :** Happy Home +91 9122191920
- **Uttar Pradesh :** Pramod Kr. Shahi +91 9830296567
  Hind Trading Company +91 7052429999
- **Bhutan :** Sriram Traders - +91 9647748327
- **Nepal :** Ashwin International Pvt. Ltd - 00977 9851035502

ISO 9001:2015 | IS:2645 | IS:9103 | ISO 22716:2007

+91 33 24490839, 9830599113 | +91 33 24490849 | contactus@hindcon.com | www.hindcon.com

Vasudha' 62 B, Braunfeld Row, Kolkata-700027, West Bengal, India

समाज विकास

◆ अक्तूबर २०२३ ◆ वर्ष ७४ ◆ अंक १०

◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक — पृष्ठ संख्या

- **संपादकीय** : ६-७
  हमारी संस्कृति – हमारी विरासत
- **आपणी बात : शिव कुमार लोहिया** ८
  आइए, परिवार में मायड़ भाषा के प्रयोग का संकल्प लें
- **रपट**
  'सामाजिक परिवर्तन और आज की चुनौतियाँ' ९
  सूचना तकनीकी एवं वेबसाइट उपसमिति की बैठक १०
  समाज विकास उपसमिति की बैठक १०
  मायड़ भाषा के प्रचार-प्रसार का निर्णय १०
  संस्कार-संस्कृति चेतना उपसमिति की बैठक, पुरस्कार चयन उपसमिति की बैठक १३
- **हमारे नवनिर्वाचित शाखाध्यक्ष**
  गुलाबबाग (बिहार), सरायकेला, खरसावाँ (झारखंड), विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश) १४
- **प्रादेशिक समाचार**
  पूर्वोत्तर, बिहार, पश्चिम बंग, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, आंध्र प्रदेश, गुजरात, सिक्किम १५-१९
- **विशेष**
  दस्तावेज २०
  इतिहास के पन्नों से २३
- **आलेख**
  इंडिया बनाम भारत–झूठा महाभारत २५
- **समाचार सार** २६
- **प्रेरक कहाणी** २७-२८

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं सम्पर्क कार्यालय : ४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७
फोन : ०३३-४००४ ४०८९

पंजीकृत कार्यालय : १५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड कोलकाता - ७००००७

◆ email: aimf1935@gmail.com
◆ Website : www.marwarisammelan.com

स्वत्वाधिकारी ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिये **श्री भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ **प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा** ◆ **संपादक : शिव कुमार लोहिया**

प्रकाशित रचनाओं से संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में पहल

सम्मेलन ने सदस्यों एवं समाज बंधु-बांधवों के लिए स्वास्थ्य के क्षेत्र में निम्नलिखित पहल की है –

सम्मेलन ने अपने सहयोगी 'बी. डी. गाड़ोदिया मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट' के माध्यम से **एस.वी.एस. मारवाड़ी अस्पताल** (अम्हर्स्ट स्ट्रीट) के साथ मिलकर विविध सर्जरी के लिए व्यवस्था की है, जिसमें **(१) हर्निया, (२) हाइड्रोसिल, (३) पाइल्स, (४) फिस्सुरे** के ऑपरेशन में होने वाले खर्च का 80 प्रतिशत योगदान 'बी. डी. गाड़ोदिया मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट' सीधे तौर पर अस्पताल को देगा और शेष 20 प्रतिशत मरीज को वहन करना पड़ेगा। इसका लाभ देश के सभी प्रांतों के समाज-बंधु ले सकते हैं।

नोट : आवेदन प्रपत्र केंद्रीय एवं प्रांतीय कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है। चिकित्सकीय सेवा का लाभ प्रांतीय अध्यक्ष या महामंत्री के अनुशंसा पत्र के माध्यम से ही मिलेगा। किसी भी प्रकार की सहायता के लिए सम्मेलन के केंद्रीय कार्यालय से दूरभाष : 033-40044089, 8697317557, ईमेल : aimf1935@gmail.com पर संपर्क कर सकते हैं।

सावधान !

इन दिनों भिन्न-भिन्न तरीकों से रुपये ठगने का गलत धन्धा चल रहा है। उदाहरणस्वरूप आपके पास किसी का फोन आ सकता है, जिसमें आपके किसी परिचित का नाम और फोटो फोन करने वाले के स्थान पर हो सकता है। अपने को उस परिचित का पारिवारिक सदस्य बताकर मुसीबत में होने की वजह से पैसे मांग सकता है, या अन्य किसी तरीके से ठगने का प्रयास कर सकता है, कृपया किसी के चक्कर में न पड़ें तथा सावधान रहें। इसी तरह के अन्य तरीके भी हो सकते हैं। कृपया सचेत रहें।

– अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

संपादकीय

हमारी संस्कृति – हमारी विरासत

भारतीय संस्कृति ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास को आवश्यक एवं महत्वपूर्ण माना है। अन्य संस्कृतियों में सिर्फ भौतिक विकास की बात की गई है। संस्कृति शब्द संस्कार से बना है। संस्कृति का अर्थ है सुधार, परिष्कार, शुद्धि आदि।

संस्कारों का सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व है। ये मनुष्यों को अच्छे गुणों से अलंकृत करते हैं। मनुष्य को योग्य बनाकर उसे कर्तव्यों के प्रति सचेत एवं जागरूक बनाते हैं। मनुष्य को सामाजिक, आध्यात्मिक नागरिक बनाने में यह सहयोग करते हैं। अज्ञानता के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाते हैं। संस्कृति हमारे द्वारा सीखा गया वह व्यवहार है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता रहता है। संस्कृति सामाजिक विरासत का वह लक्षण है जो हम अपने पूर्वजों से सीखते हैं। मनुष्य संस्कृति को बिना किसी प्रयास के अचेतन मन से ही सीख लेता है। संस्कृति आत्मा होती है।

मूनानी, पर्शियन, शक आदि विदेशी जातियों के हमले, मुगलों और अंग्रेजी साम्राज्यों के आघातों के बीच यह संस्कृति नष्ट नहीं हुई। इस तथ्य को मोहम्मद इक़बाल ने इन पंक्तियों में व्यक्त किया था :

यूनान-ओ-मिस्र रोमा सब मिट गए जहां से,
अब तक मगर है बाकी नामो-निशां हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं मिटाए,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-जमां हमारा।।

अतएव यह समझना आवश्यक है कि हमारी संस्कृति में ऐसा क्या है जो कि दूसरों से श्रेष्ठ है एवं जिसके कारण उसका प्रभाव अभी तक समाप्त नहीं हुआ है। हालाँकि यह स्वीकार करना होगा कि शनैः-शनैः हम अपनी विशेषताओं से अनभिज्ञ होने के कारण अन्य संस्कृतियों की ओर आकर्षित होते जा रहे हैं।

पाश्चात्य भौतिक विचारधारा के समर्थक बेकन का मानना है कि – "यह संसार ही सत्य है, यही सब कुछ है। यह मानकर ही हमें जीवन-पथ का निर्माण करना चाहिए।"

जीवन के संबंध में हमारी संस्कृति मानती है कि हमारा जीवन तभी सार्थक कहा जा सकता है, जब हम भौतिक जीवन के आगे भी तैयारी कर सकें। भौतिक जीवन भी सत्य है, आध्यात्मिक जीवन भी सत्य है, दोनों को सत्य मानकर ही जीवन-पथ पर हमें चलना है। उपनिषद में कहा गया है – तेन त्यक्तेन भुंजीथाः। अर्थात जो त्याग करते हैं वे ही भोग पाते हैं। संसार भोग के लिए ही रचा गया है, परंतु संसार के भोग में ऐसे लिप्त न हो जाओ कि अपनी सुध-बुध ही भूल जाओ। जीवन-जीने में इतने मशगूल न हो जाओ कि यह भी भूल जाओ कि उड़ने के लिए दो पंख भी मिले हैं। आत्मा, शरीर के बिना, परमात्मा, प्रकृति के बिना अपने चैतन्य स्वरूप को प्रकट नहीं कर सकता। इस आत्मा के लिए शरीर का और परमात्मा के लिए प्रकृति का विकास उतना आवश्यक है, जितना कारीगर के लिए उसके साधन का, उपकरण का उत्तम होना आवश्यक है।

उपनिषदों का कहना है कि हमारे शरीर में पाँच कोष हैं – अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय। जो प्राणी सिर्फ रहने, जनि, पीने को महत्व देता है, वह अन्नमय कोष में जीता है। भौतिक जीवन ही उसका जीवन है। आध्यात्मिक जीवन के लिए वह मृत समान है। यह अवस्था पशु योनि के समान है। हम जो जीवन बिता रहे हैं, गीता में उसे स्वक्त कहा गया है। हम सोया हुआ जीवन बिता रहे हैं। हम जाग नहीं रहे, पर हम समझते हैं कि हम जगि रही हैं। शरीर में जीना, जीना नहीं है। तैत्तिरीयोपनिषद के शब्दों में यह मरना है। वास्तविक जीने के लिए शरीर से आगे बढ़कर मन में जीना होगा। गीता का कथन है – लोग अपने को जागा हुआ समझते हैं, वे जगे हुए नहीं, सोये हुए लोग हैं। जो उस स्थिति से अपने को उपर उठा लेगा, वह मनुष्य न बुढ़ापे (जरा) को कुछ समझता है, न मृत्यु को कोई अहमियत देता है। न भौतिक कष्ट को गिनता है और न मानसिक कष्ट को कुछ समझता है। ऐसे लोग वास्तविक जगे हुए लोग हैं।

प्रश्न उठता है कि हम किसके लिए जियें? खाने-पीने के लिए तो पशु भी जीते हैं। फिर मानव की सार्थकता क्या है? शरीर आत्मा का आधार है, साधन है – यह जानकर जीना ही जीवन की सार्थकता है। इसी विचार को कठोपोनिषद में सुंदरता से व्यक्त किया गया है – शरीर एक रथ है, इंद्रियाँ उसमें जुते घोड़े हैं ये घोड़े संसार के विषयों की ओर दौड़ रहे हैं, मन लगाम है, बुद्धि सारथी है और इस रथ पर सवारी करने वाली आत्मा है। पर आज स्थिति यह है कि हमारा लगाम इंद्रिय के हाथ में आ जाती है, तब आत्मा भोक्ता के स्थान पर इंद्रियाँ भोक्ता हो जाती हैं।

सभ्यता को शरीर एवं संस्कृति को आत्मा कहा गया है। सभ्यता का अभिप्राय मानव के भौतिक विकास से है, जिसके अंतर्गत परिष्कृत एवं सभ्य समाज की वे स्थूल वस्तुएँ आती हैं जो बाहर से दिखाई देती हैं; जैसे – रेल, मोटर, सड़क, वेशभूषा, मोबाइल आदि। संस्कृति के अंतर्गत वे आंतरिक गुण आते हैं जो समाज के मूल्य एवं आदर्श होते हैं जैसे – सज्जनता, सहृदयता, सहानुभूति, विनम्रता, सुशीलता आदि। जिस तरह गंगा के उदगम स्रोत से समुद्र में प्रवेश होने तक अनेक नदियाँ एवं धाराएँ उसमें समाहित होती हैं, उसी तरह हमारी संस्कृति भी है। हमारी संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। जब व्यक्ति सोच-समझकर प्रयत्नपूर्वक अपने मन, बुद्धि आदि का विकास करता है तो उसका वह विकास ही संस्कार कहलाता है। प्रयत्न करके वह अपने पामरता को त्यागकर संस्कारिता प्राप्त कर सकता है। प्रमादवश वह अपने उच्च संस्कारों को छोड़कर पामरता के गर्त में गिर सकता है। कहा गया है –

प्रमादं वै मृत्युमहं ब्रवीमि, तथथ्यमादममृतत्वं ब्रवीमि।

अर्थात प्रमाद के कारण उत्पन्न पामरता ही मृत्यु है और अप्रमाद से प्राप्त होने वाली संस्थरिता ही अमरता है। एक अन्य सुभाबित में भी कहा गया है –

जन्मना जायते शूद्रः संस्कारे द्विज उत्मते

अर्थात मनुष्य जन्म से द्विज नहीं होता, संस्कार उसे द्विज बनाता है।

इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि संस्कार एवं संस्कृति का मनुष्य को मनुष्य के उपयुक्त जीवन जीने के लायक बनाने में मुख्य भूमिका होती है। आज हम चारों तरफ देख सकते हैं कि भौतिक विकास की ओर ही मनुष्य दौड़ रहा है। आज की सोच चार्वाक दर्शन के कैसे इर्द-मिद-गिर्द घूम रहा है, जिसमें कहा गया है –

यावज्जीवेत्सुखं जीवेत, ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।

मनुष्य जब तक जीवित रहे तब तक सुखपूर्वक जिये।

ऋण करके भी घी पिये। अर्थात सुख-भोग के जो भी उपाय करने पड़े, उन्हें करे। दूसरों से उधार लेकर भौतिक साधन जुटाने में हिचके नहीं। परलोक, पुनर्जन्म और आत्मा-परमात्मा जैसी बातों की परवाह न करे। भला जो शरीर मृत्यु पश्चात भष्मीभूत हो जाए, यानी जो देह दाह-संस्कार में राख हो चुका, उसके पुनर्जन्म का सवाल कहाँ उठता है।

चार्वाक दर्शन वस्तुतः आज का विज्ञानपोषित भौतिकवाद है। इसकी मान्यता है कि समस्त सृष्टि भौतिक पदार्थ और उससे अनन्य रूप से संबद्ध उर्जा का ही कमाल है।

अनुभव बताते हैं कि मनुष्य को आहार, निद्रा, भय, मैथुन के अलावा भी कई ऐसे गुण एवं कार्य संपादन करने के अवसर मिले हैं, जिसके उपयोग से वह अपने जीवन का मान उच्च से उच्चतर ले जा सकता है। वर्तमान में हम देख रहे हैं कि समाज में धन का बोल-बाला है। मनुष्य की कीमत उसके नैसर्गिक गुणों से नहीं माप कर, उसके पास उसके धन एवं उसके पास के साधन-सामग्रियों से मापा जाता है। वास्तविकता यह है कि पद, धन, मान तो आते-जाते रहते हैं, पर मनुष्य के वे गुण, जिन्हें धन से नहीं खरीदा जा सकता, वे उसके पास सदैव रहते हैं। ये गुण अमूल्य हैं – समय, आत्मीयता, वफादारी, आंतरिक शांति, नैतिकता, प्रसन्नता, प्रेम, संतोष, परिवार, नींद, स्वास्थ्य, चरित्र, विश्वास, एक नोबल पुरस्कार या ओलंपिक मेडल। बफेलो यूनिवर्सिटी और हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के एक अध्ययन के अनुसार, जो लोग अपने पैसों पर घमंड करते हैं वे अक्सर रोजमर्रा की जिंदगी में अकेलेपन का अनुभव करते हैं। फिर भी उनका कहना है कि हो सकता है कि धन आपको खुश नहीं करे, लेकिन फेरारी में रोना अच्छा है। जब खुशी को आप भौतिक वस्तुओं एवं अपने निवेश की संख्याओं पर आधारित करते हैं तो वह खुशी उन पर निर्भर हो जाती है। एक व्यक्ति को वास्तव में जितने धन की आवश्यकता होती है, उससे अधिक धन सिर्फ दिखावा के लिए होता है।

उन सब अतिवाद से हटकर जीवन का वास्तविक आनंद लेने के लिए हमारी संस्कृति हमें सही दिशा प्रदान करेगी। हमारी संस्कृति में कर्मवाद का सिद्धांत, प्रतिप्रादित विचार गीता में कहा गया है –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽत्वकर्मजीकर्मणि।। (२-४७)

अर्थात तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू फल की दृष्टि से कर्म मत कर और न ही ऐसा सोच कि फल की आशा के बिना कर्म क्यों करूँ। एक सुभाषित में कहा गया है :

उधमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।
चरैवेति! चरैवेति!!

अर्थात, जो कार्यरत रहता है, आलस्य नहीं करता, लगातार मेहनत करता है, वही उन्नति कर सकता है, प्रगति कर सकता है, अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है।

हमारे संस्कृति की अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है सहिष्णुता। सहिष्णुता हमारे संस्कृति का आधार स्तंभ है। राम, बुद्ध, महावीर, कबीर, नानक, चैतन्य महाप्रभु, महात्मा गांधी, सबों ने हमें सहिष्णुता का पाठ सिर्फ पढ़ाया ही नहीं बल्कि, अपने जीवन में आचरण करके हमें सिखाया भी।

विश्वबंधुत्व की भावना हमारे संस्कृति को विशिष्ट बनाती है। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना मनुष्य को विशालता प्रदान करती है। हमारे मनीषियों ने सबके कल्याण के लिए प्रार्थना की है। उन्होंने कहा –

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे संतु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मां कश्चित् दुख भाग्भवेत।।

सभी सुखी होवें, सभी रोग मुक्त रहें, सभी का जीवन मंगलमय बनें और कोई भी दुख का भागी न बने। हे भगवन ऐसा वर दो। गीता में भी सर्वभूत हिते रतः की बात की गई।

हमारे विचारों में बाहुल्यता होनी चाहिए। इससे जीवन का भरपूर आनंद लिया जा सकता है। संकुचित विचारों से जीवन भी संकुचित हो जाता है। जब हम सिर्फ स्वयं के विषय में सोचने लगते हैं तो मनुष्य स्वकेंद्रित हो जाता है।

अनेकता में एकता के भाव से हम समन्वय कर अपने जीवन को सरल एवं सहज बना सकते हैं। हमारे संस्कार की अत्यधिक महत्वपूर्ण व्यवस्था है पुरुषार्थ एवं वर्णाश्रम की व्यवस्था। जीवन को सर्व प्रकारेण आनंदपूर्वक मनाने के लिए पुरुषार्थ चतुष्टम – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की उद्भावना को रखा गया है। सबसे पहले धर्म रखा गया है। धर्म के अभाव में अर्थ एवं काम के पीछे भागते रहने से समाज में अव्यवस्था फैल जाती है। मानव अर्थ के पीछे भागते-भागते मोक्ष के लक्ष्य को भूल जाता है। पहले धर्म, उसके बाद अर्थ और काम। मानव अर्थ और काम से मुक्त नहीं हो सकता। ये दोनों पुरुषार्थ आवश्यक हैं। अर्थ की अधिकता से मानव में पागलपन सवार हो जाता है। इसी प्रकार काम की प्रबलता से सामाजिक मर्यादा ध्वस्त होती है। समाज में उच्छृंखलता बढ़ती है। आज समाज में इन्हीं दोनों पुरुषार्थों के पीछे भागते-भागते, मोक्ष की उपेक्षा के कारण भ्रष्टाचार एवं व्यभिचार बढ़ रहा है। मानव अशांत है।

इन चार पुरुषार्थ के साथ-साथ वर्णाश्रम व्यवस्था गुण और धर्म पर निर्धारित की गई है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। ब्रह्मचर्य को धर्म का ज्ञान अर्जन के लिए, गृहस्थ को धर्म के अनुकरण अर्थ-अर्जन एवं काम पूर्ति के लिए, वानप्रस्थ एवं संन्यास को मोक्ष की ओर उन्मुख होने के लिए कहा गया है।

एक तरफ जहाँ हम अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं, दूसरी तरफ अन्यान्य संस्कृति के लोग अपने भोगवाद की संस्कृति से त्रस्त होकर हमारी संस्कृति अपनाकर अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्य से अवगत होते हैं एवं घोर अशांति से निकलकर शांति प्राप्त करते हैं।

हम, हमारे बच्चों को अपनी भाषा, संस्कार, संस्कृति, ज्ञान से दूर रखते हैं। हमारी संस्कृति में प्रकृति की पूजा की गई है। योग एवं ध्यान का प्रतिपादन किया गया है। हमारे संस्कृति अवधारणाओं के पीछे वैज्ञानिक आधार एवं विश्वकल्याण की भावना नीहित है। तुलसी पूजन, वृक्षों की पूजा, सूर्य नमस्कार, शंखनाद, गायत्री मंत्र, उपवास आदि ऐसे प्रावधान है जो कि निश्चय ही गहन अन्वेषण एवं एकाग्रता का प्रतिफल होगा। हजारों वर्षों से चले आ रहे इन संस्कारों का लाभ आज विश्व के कोने-कोने में लोग उठा रहे हैं।

हमारी संस्कृति एक संतुलित, फलदानी, उन्नत मान के जीवन जीने का पथ प्रशस्त करती है। जीवन एक वीणा की तरह है। उसके तार ढीले पड़ जाए या ज्यादा कसा जाए, दोनों ही हालत में सुर नहीं निकलेंगे। इसलिए संतुलन आवश्यक है। यह संतुलन हमें जाग्रत होकर जीने से ही मिलेगा। हमारे मनीषियों ने इसीलिए कहा है – उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत। उठो, जागो एवं ज्ञानियों से ज्ञान प्राप्त करो। हमारी संस्कृति में सर्वश्रेष्ठ ज्ञान का खजाना है। इसमें से कुछ रत्न भी निकालकर हम अपने जीवन में अपना सकें तो हमारा जीवन धन्य हो जाएगा।

आपणी बात

आइए, परिवार में मायड़ भाषा के प्रयोग का संकल्प लें

– शिव कुमार लोहिया

राम-राम!

इस बार अक्तूबर माह वर्ष का महत्वपूर्ण माह है। यह गांधी जयंती से प्रारंभ होता है। इस बार इसी माह में शक्ति की आराधना के रूप में दुर्गापूजा एवं असत्य पर सत्य के विजय के प्रतीक स्वरूप दशहरा मनाएंगे। कोई भी विशेष दिन या पर्व मनाने का खास मकसद होता है कि उसमें निहित संदेश का हम मनन कर अपने जीवन में उतारें। जब तक विश्व को घृणा, हिंसा, असत्य से ऊपर उठाने की आवश्यकता रहेगी, तब तक गांधी की प्रासंगिकता एवं महत्व कम नहीं होगा। वे सदैव मानवता के लिए प्रेरणास्रोत बने रहेंगे। उनकी जन्म जयंती पर श्रद्धापूर्वक नमन!

भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जहा शक्ति देवी रूप में पूज्य हैं। नवरात्रि या दुर्गापूजा वैयक्तिक, सामाजिक एवं धार्मिक रूप से हमारे जीवन में अतुलनीय स्थान रखता है। हिंसा, द्वेष, बुराई, अमानवीयता जब अपने चरम पर पहुँच गया तब महिषासुर रूपी महादानव को नष्ट करने के लिए सभी देवताओं की शक्ति को संगठित कर दुर्गा का प्रादुर्भाव किया गया। उनके विषय में मान्यता है कि वे शांति, समृद्धि तथा धर्म पर आघात करने वाली प्रवृत्तियों एवं शक्तियों का विनाश करती हैं। ऋग्वेद के अनुसार, मां दुर्गा ही आदि शक्ति हैं, उन्हीं से पूरे विश्व का संचालन होता है। सभी पाठकों को नवरात्रि की अशेष शुभकामनाएँ।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम ने जिस दिन राक्षसी प्रवृतियों के सिरमौर प्रतीक चिह्न रावण का वध किया था, उस दिन को दशहरा के रूप में मनाया जाता है। काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, मत्सर, मानस, बुद्धि, चित्त, अहंकार रूपी दस सिर का स्वामी दशानन यानी रावण की शक्तियों का पार पाना संभव नहीं था। उस दशानन का वध राम ही कर सकते हैं। इससे हम यह समझ सकते हैं कि जब तक ये दस विकार नष्ट नहीं होते, हमारे हृदय में राम का उदय नहीं होगा। ईश्वर से प्रार्थना है कि हम सबके हृदय में सदैव राम स्थित रहें एवं हमारे जीवन का मार्गदर्शन करते रहें।

अब एक दृष्टि हम सम्मेलन की गतिविधियों पर डाल लें, यानी पूरे माह सक्रियता से परिपूर्ण रहा। विभिन्न उपसमितियों में महत्वपूर्ण विचार-विमर्श हुए। कई निर्णय भी लिए गए। उनका उल्लेख 'समाज विकास' के इस अंक में हुआ है। हर्ष का विषय है कि नए लोग विभिन्न कार्यक्रमों से जुड़कर अपना सक्रिय योगदान दे रहे हैं। पूर्वोत्तर प्रांत से निरंतर सक्रियता के समाचार मिल रहे हैं। बिहार में भी शाखाओं को सक्रिय करने का पुरजोर प्रयास जारी है। अतिशय प्रसन्नता की बात है कि नई शाखाएँ खुल रही हैं। हाल ही में झारखंड प्रांत से अनेक दिनों से लंबित ५८८ नए सदस्यों की सूची प्राप्त हुई। सद्यः आयोजित वार्षिक साधारण सभा में झारखंड प्रांत के अध्यक्ष एवं सम्मेलन के प्रवीण सिपाही श्री बसंत मित्तल ने झारखंड प्रांत में ५० नई शाखाएँ खोलने का आश्वासन दिया, जो कि अत्यंत ही उत्साहवर्द्धक है। श्री मित्तल एवं उनकी पूरी टीम को मैं इस विषय पर अग्रिम शुभकामनाएँ देना चाहूँगा।

समाज-सुधार, समरसता एवं संस्कार-संस्कृति पर हम सब को मिल-जुलकर काम करना है। इस विषय पर पूरा जागरूक रहना चाहिए। सेवा के कार्य प्रांत एवं शाखा स्तर पर हो रहे हैं, किंतु हम सम्मेलन की प्राथमिकताओं को नजरअंदाज नहीं कर सकते। मैं मानता हूँ कि ये कार्य दुरूह हैं एवं कुछ हद तक लोकप्रिय भी नहीं। पर सम्मेलन उसके प्रति समर्पित है। सभी स्तर के सदस्यों एवं पदाधिकारियों से सविनय आग्रह है कि उन विषयों पर अपने सुझाव दें एवं आवश्यक कार्रवाई करें। कहा जाता है कि समाज में आज कोई किसी की सुनता नहीं। जन-आंदोलनों का युग अब नहीं रहा। भौतिक प्रगति के बावजूद नैतिक पराभव एक चिंतनीय स्थिति है। इस स्थिति के प्रति उदसीनता का दूरगामी परिणाम निकलेगा, जिसके लिए इतिहास कभी भी हमें माफ नहीं करेगा। प्रश्न यह उठता है कि इस विषय पर किस प्रकार पहल की जाय? गुवाहाटी में आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में भाषा एवं समाज-सुधार के प्रस्ताव तो पारित हो गए, पर उन्हें लागू किस विधि से किया जाय? हमारा सौभाग्य है कि हमारे पास सम्मेलन जैसा मंच है, जहाँ सदैव ही समाज को संगठित, परिमार्जित करने की दिशा में निरंतर प्रयास होता आया है। आज निराश होने की बजाय अपने संकल्पों को हमें मजबूती प्रदान करने का अवसर है। हम अगर अपनी भाषा, संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, आचार-व्यवहार से कट जाएँगे तो हमारी पहचान ही नष्ट हो जाएगी। अतएव, इस दिशा में प्रयास करने के सिवाय कोई विकल्प ही नहीं है हमारे पास। हमारी नई पीढ़ी, नए पौध को हमारी संस्कृति के विषय में अवगत करवाना चाहिए। उन्हें यह बताने की जरूरत है कि परिवर्तन एक निरंतर प्रक्रिया है। पर हमें परिवर्तन के रथ पर सवार होकर लगाम अपने हाथों में रखना है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि परिवर्तन के चक्र को हम अपने लाभ के लिए प्रयोग करें। अपने जड़ों को हम मज़बूत रखें। पेड़ में पत्ते झड़कर नए आते रहते हैं। यह तभी होता है जब जड़ गहरी हो। परिवर्तन की आँधी आकर गुजर जाएगी। पत्ते नए आ जाएँगे इसलिए यह आवश्यकता है कि हम जो भी करें, हम हमारे संस्कृति की बुनियादी बातों से कोई समझौता नहीं करें। भौतिकवाद एवं भोगवाद के प्रबलता वाले क्षेत्र में आज मानसिक तनाव एवं मानसिक अस्वस्थता महामारी का स्वरूप लेती जा रही है। इस प्रकार की स्थिति से समाज को बचाने के लिए यह अत्यावश्यक है कि हम सभी प्रकार के आवश्यक कदम उठाएँ। कहा जाता है कि अपेक्षित बदलाव हम हमारे सोच में परिवर्तन लाकर ही कर सकते हैं। सोच के परिवर्तन के लिए हमें ज़मीन तैयार करना होगा। जनमत के सोच में परिवर्तन के लिए हमें साहित्य का सहारा लेना चाहिए। साहित्य का सामर्थ्य देखना हो तो हमें रामचरितमानस याद आता है। ये चार शताब्दियों से भी अधिक करोड़ो लोगों के मानस पटल पर अपनी छाप छोड़ने में सफल हुआ है। कहा गया है – 'सहितस्य भावः साहित्यम्' जिसमें 'सहित' अर्थात जुड़े हुए का भाव हो, उसे साहित्य कहते हैं। प्रश्न उठता है कि साहित्य किसे जोड़ता है? साहित्य समाज के टूटन दूर करने, मनोमालिन्य दूर करने, मनुष्य की बुद्धि, विवेक जागृत करके मनुष्य को एक दूसरे के निकट लाने के लिए रचा जाता है। कहा भी गया है – साहित्य समाज का दर्पण होता है और कलम तलवार से भी अधिक ताकतवर होती है। अतएव, आवश्यक ज़मीन तैयार करने में साहित्य का सहारा लेना समीचीन लगता है। इसी दिशा में पहल करते हुए गत १३ अक्तूबर को देश-विदेश में लब्ध प्रतिष्ठित भूर्धन्य साहित्यकार एवं समाज की ही सशक्त आवाज डॉ. अलका सरावगी को 'सामाजिक परिवर्तन – वर्तमान चुनौतियाँ' पर अपना सारगर्भित वक्तव्य देने सम्मेलन ने आमंत्रित किया। डॉ. सरावगी की रचना देश-विदेश की अनेक भाषाओ में अनूदित हो चुकी है। उन्होंने मारवाड़ी एवं मारवाड़ी परिवार पर अनुसंधान कर काफी कुछ लिखा है। इस विषय में व्यापक चर्चा करने की प्रक्रिया से गुजरते हुए हमें अपनी मंजिल पाने के लिए सही दिशा अवश्य प्राप्त होगा, ऐसा मुझे दृढ़ विश्वास है।

शुरुआत करने के लिए हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम घर में परिवार के सदस्यों से मायड़ भाषा में ही बात करेंगे। खासकर नए पीढ़ी से इस विषय में सजगता के साथ प्रयोग में लाएँगे। उसके लिए आने वाले त्योहार के सभी समारोहों में हम यह संदेश दें। मारवाड़ी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए विगत कुछ वर्षों से 'सीखो राजस्थानी' विषय पर सम्मेलन निःशुल्क पुस्तक वितरण करता आ रहा है। इस दिशा मे सम्मिलित प्रयास अवश्य ही सार्थक होंगे। अगर हमारे परिवार में हमारी भाषा जीवित रहेगी तो हमारी संस्कृति भी बची रहेगी।

आपणो समाज - एक समाज - श्रेष्ठ समाज

विसंगतियों की गाँठ को बड़े धीरज, धैर्य और सावधानी से शांतिपूर्वक खोलने की जरूरत : श्री लोहिया

आज बहुत जरूरी है कि हम अपने बच्चों को अपना इतिहास बताएँ: बोलीं डॉ. अलका सरावगी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के केंद्रीय कार्यालय सभागार में १३ अक्तूबर, शाम ५ बजे **'सामाजिक परिवर्तन और आज की चुनौतियाँ'** विषयक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी की अध्यक्षता सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिव कुमार लोहिया ने किया। सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ ने दुपट्टा पहनाकर एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिव कुमार लोहिया ने शाल भेंटकर डॉ. अलका सरावगी का सम्मान किया। श्री लोहिया ने सभी उपस्थित महानुभावों का अभिनंदन करते हुए कहा कि समाज गतिशील है और परिवर्तन एक निरंतर प्रक्रिया है। आज हमें यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि परिवर्तन की लगाम हमारे हाथ में है या परिवर्तन हमें संचालित कर रहा है। समाज में जो विसंगतियों की गाँठ पड़ गई है, उसे बड़े धीरज, धैर्य एवं सावधानी से शांतिपूर्वक खोलने की जरूरत है। हमें हमारे भाषा, संस्कार एवं संस्कृति को बचाए रखने की जरूरत है। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री केदार नाथ गुप्ता ने डॉ. अलका सरावगी के रचना संसार से उपस्थित श्रोताओं को परिचित कराया। प्रबुद्ध चिंतक एवं साहित्यकार प्रधान वक्ता डॉ. अलका सरावगी ने संगोष्ठी में अपना वक्तव्य देते हुए कहती हैं कि आज बाजारवाद के युग में उपभोक्तावाद बढ़ा है तो समाज में बिखराव आया है। आज बच्चे दुनिया के तौर-तरीके के साथ चलना चाहते है। आज हम खुद अपने इतिहास को ध्वस्त कर रहे हैं, जबकि बहुत जरूरी है कि हम अपने बच्चों को अपना इतिहास सुनाएँ। 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित अपने उपन्यास 'कलि-कथा वाया बाइपास' के एक अंश का पाठकर वें बताती हैं कि कैसे हम अपने मूल्यों को भुला रहे हैं। हमारी भाषा की जड़ें हजारों साल पुरानी हैं, वह रस देती हैं। जब हम उसका रस लेने लगते हैं तो वह हमें आनंदित करती है।

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री संतोष सराफ ने कहा कि सम्मेलन हमेशा से समाज-सुधार लेकर चला है। आज हमें समाज में पनपी नई कुरीतियों को रोकने की आवश्यकता है। विचारों से ही इसे रोका जा सकता है।

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्रिका 'वैचारिकी' के संपादक डॉ. बाबूलाल शर्मा ने भारतीय विद्या मंदिर से प्रकाशित अपनी पुस्तक 'हिन्दी भाषा-साहित्य में बंगालेर अवदान' दुपट्टा एवं ममेंटो भेंटकर डॉ. अलका सरावगी का सम्मान किया। सुश्री नैना मोर ने डॉ. सरावगी से कहा कि आपको सुनते हुए मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं पुराना और अपने समय दोनों को देख रही हूँ। राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री पवन कुमार जालान ने उपहार भेंटकर डॉ. अलका सरावगी का सम्मान किया। सम्मेलन के निवर्तमान राष्ट्रीय आध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, सर्वश्री अरुण प्रकाश मल्लावत, कैलाश जैन सहित अन्य प्रांतों के पदाधिकारी एवं सदस्यों ने आभासीय पटल जूम के माध्यम से जुड़कर संगोष्ठी का लाभ उठाया। राष्ट्रीय महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी ने कार्यक्रम का संचालन किया। सम्मेलन के राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री एवं सेमिनार उपसमिति के संयोजक श्री संजय गोयनका

ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। इस अवसर पर फाइनेंस कमेटी के चेयरमैन श्री आत्माराम सोन्थलिया, निवर्तमान उपाध्यक्ष श्री भानीराम सुरेका, डॉ. विजय केजरीवाल, सर्वश्री जुगल किशोर जाजोदिया, सुरेश अगरवाल, सांवरमल शर्मा, विनोद टेकरीवाल, महाबीर प्रसाद मनकसिया, विजय कानोडिया, रघुनाथ झुनझुनवाला, बसंत सेठिया, पवन जैन, पुरुषोत्तम अग्रवाल, अमित मूंधड़ा, संपत बरमेचा, अनिल मल्लावत, पवन बंसल, नंदकिशोर अग्रवाल, हर्ष कुमार शर्मा, शशि कांत साह, विश्वनाथ भुवालका, सुभाष चंद्र गोयनका, गोपाल पित्ती, शरद श्रॉफ, सज्जन बेरीवाल, रमेश बूबना, नवीन गोपालिका, मुन्ना सुल्तानिया आदि मौजूद रहे।

सम्मेलन ने लिया मायड़ भाषा के प्रचार-प्रसार का निर्णय

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा गठित मायड़ भाषा उपसमिति की पहली बैठक में मायड़ भाषा (राजस्थानी भाषा) के प्रचार-प्रसार का संकल्प लिया गया। मायड़ भाषा उपसमिति की बैठक समिति के चेयरमैन, समाजसेवी श्री रतन लाल शाह की अध्यक्षता में सम्मेलन कार्यालय में ०४ अक्तूबर २०२३ को संपन्न हुई। लंबे समय से राजस्थानी भाषा के प्रचार हेतु प्रयासरत श्री शाह ने २१ फरवरी को राजस्थानी भाषा दिवस के रूप मे जोरदार ढंग से मनाने का सुझाव रखा।

समिति के संयोजक श्री अरुण प्रकाश मल्लावत ने जानकारी देते हुए बताया कि समिति की बैठक में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिव कुमार लोहिया ने नई पीढ़ी में मायड़ भाषा के प्रचार-प्रसार पर जोर देने का सुझाव दिया। बैठक में राजस्थानी भाषा को संविधान में मान्यता दिलाने, इसका प्रचार-प्रसार करने, दैनिक जीवन में उपयोग में लाने, पुस्तकें प्रकाशित कराने, सांस्कृतिक आयोजन करने एवं वर्चुअल कक्षा चलाने आदि महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई।

समिति के सदस्य श्री जगदीश प्रसाद सिंघी ने पत्र व्यवहार मारवाड़ी में करने एवं मारवाड़ी भाषा की ऑनलाइन कक्षाएं चलाने का सुझाव दिया। वरिष्ठ सदस्य श्री सांवरमल शर्मा ने राजस्थानी भाषा में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम करने, कविताओं एवं गीतों की प्रतिस्पर्धा कराने पर जोर दिया। सम्मेलन द्वारा प्रति वर्ष दिए जाने वाले पुरस्कारों के आवेदनों की जानकारी दी गई।

सूचना तकनीकी एवं वेबसाइट उपसमिति

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के डकबैक हाउस, सम्मेलन सभागार में ५ अक्तूबर २०२३ को सूचना तकनीकी एवं वेबसाइट उपसमिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता सूचना तकनीकी एवं वेबसाइट उपसमिति के चेयरमैन श्री अजय कुमार अग्रवाल ने की। श्री अग्रवाल ने सभी उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया एवं सूचना तकनीकी एवं वेबसाइट के संबंध में सुझाव देने का अनुरोध किया।

बैठक में सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिव कुमार लोहिया भी उपस्थित थे। उन्होंने वेबसाइट में नवीनतम संशोधन के लिए संबंधित विवरण दिया। बैठक में उपस्थित राष्ट्रीय महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी ने सम्मेलन के डिजिटलीकरण में किए गए कार्यों (१. 'समाज विकास' मासिक पत्रिका का प्रत्येक सदस्य को स्मार्ट फोन पर प्रेषण, २. सदस्यगण अपने सदस्यता की जानकारी में किसी भी भूल का संशोधन स्वयं ही कर पाएँगे, ३. वैवाहिक, व्यापारिक एवं नौकरी संबंधी पेज वेबसाइट में जुड़ गए, ४. सम्मेलन में उपलब्ध पुस्तकों का वेबसाइट पर प्रकाशन, ५. सदस्यों को

जन्मदिन पर स्वचालित शुभकामना संदेश का संप्रेषण, ६. फेसबुक, इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया पर पेज के माध्यम से समाज-बंधुओं तक सम्मेलन की पहुँच, ७. SMS के माध्यम से सम्मेलन की सूचनाओं का प्रत्येक सदस्य को त्वरित संप्रेषण, ८. 'AIMF ऐप' की प्ले स्टोर पर उपलब्धता) इत्यादि की जानकारी साझा कर उपस्थित सदस्यों से विचार-विमर्श किया। सूचना तकनीकी एवं वेबसाइट उपसमिति के संयोजक श्री नवीन गोपालिका ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

समाज विकास उपसमिति

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की 'समाज विकास उपसमिति' की बैठक ७ अक्तूबर २०२३ को केंद्रीय कार्यालय के सभागार में आयोजित की गई। बैठक में उपस्थित सदस्यों का उपसमिति के चेयरमैन श्री शिव कुमार लोहिया ने अभिनंदन किया। श्री लोहिया ने बैठक में उपस्थित सभी महानुभावों से 'समाज विकास' पत्रिका को अधिक पठनीय एवं बेहतर बनाने के संबंध में सुझाव देने का अनुरोध किया।

बैठक में उपस्थित सदस्यों ने पत्रिका को बेहतर बनाने से संबंधित कई सुझाव दिए यथा – सम्मेलन के गौरवशाली इतिहास का स्तंभ निकालना, समाज के अवदानों को प्रकाशित करना, चिकित्सा संबंधी प्रभावी स्तंभ, समरसता से संबंधित रपट के लिए प्रांतों से अनुरोध, वितरण सुधार, प्रत्येक प्रांतों से एक आलेख के लिए निवेदन, विज्ञापन के लिए प्रांतों से निवेदन करना इत्यादि।

बैठक में सम्मेलन सभागार में उपस्थित थे श्री शिव कुमार लोहिया, श्री कैलाशपति तोदी, श्री भानीराम सुरेका, श्री पवन कुमार जालान एवं आभासीय पटल जूम के माध्यम से गुवाहाटी से जुड़े थे डॉ. श्याम सुंदर हरलालका। बैठक के अंत में समाज विकास उपसमिति के संयोजक श्री पवन कुमार जालान ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

IAC
SINCE 1959
ISO 9001:2015
ISO 14001:2015
ISO 45001:2018
NABL Accredited Lab
POWERING 35 NATIONS ACROSS THE WORLD
IAC Electricals Pvt Ltd is the one stop solution for providing innovative product and services to the electric power utility since 1959
PRODUCTS & SERVICES OFFERED:
• Transmission line and substation insulator fittings up to 1200 kV AC and 800 kV HVDC
• Conductor and groundwire accessories
• HTLS conductor accessories and Sub zero hardware fittings
• OPGW cable fittings
• Pole/Distribution line hardware
• AB Cable and ADSS cable accessories
• Substation clamps and connectors
• Conductor, Insulator and hardware testing facility
Transmission line and distribution line hardware fittings,
IEC/ISO 17025/2015 NABL accredited laboratory for conductor, insulator and hardware fittings type testing.
www.iacelectricals.com
info@iacelectricals.com
701, Central Plaza, 2/6, Sarat Bose Road, Kolkata - 700020

Introducing

nouriture

New thinking that heralds the journey to progress

Nouriture is here to usher in a new era of livestock farming through new products, technologies and services. Building on its heritage of 19 years under the name Anmol Feeds, its range includes easily digestible Poultry, Fish, Cattle and Shrimp Feed. Nouriture produces superior quality poultry feed under three different brand names that are nutritious and accelerates growth of poultry. Indeed, with the advent of Nouriture, Indian livestock farming is all set for a revolution. So choose Nouriture, choose progress.

HIGH YIELD | PROMOTES ANIMAL HEALTH | MANUFACTURED USING MODERN FORMULATION

POULTRY FEED | FISH FEED | SHRIMP FEED | CATTLE FEED

Scan to visit website

Manufactured & Marketed by:
ANMOL FEEDS PVT. LTD.

Toll free number:
1800 3131 577

Unit No. 608 & 612, 6th Floor, DLF Galleria, New Town, Kolkata-700156, West Bengal
P +9133 4028 1011-1035 E afpl@nouriture.in W www.nouriture.in

संस्कार-संस्कृति चेतना उपसमिति

संस्कार-संस्कृति चेतना उपसमिति की पहली बैठक उपसमिति के चेयरमैन श्री संदीप गर्ग की अध्यक्षता में सम्मेलन कार्यालय में १६ अक्तूबर २०२३ को संपन्न हुई। उपसमिति के चेयरमैन श्री गर्ग ने बैठक में उपस्थित सदस्यों का अभिनंदन करते हुए उनसे-अपने विचार रखने की अपील की।

उपसमिति के सदस्य श्री ओम प्रकाश पोद्दार ने कहा कि आज विवाह-लग्न समय में नहीं होता है, हमें समाज के लोगों को जागरूक कर दिन में विवाह सुबह ८ बजे से अपराह्न १ बजे आयोजित करने की ओर प्रयास करना चाहिए, जिसके लिए महिलाओं को आगे आने की आवश्यकता है।

श्री अशोक कुमार अग्रवाल ने अपना विचार रखते हुए कहा कि संस्कार-संस्कृति ह्रास के कारण ही समाज में कुरीतियाँ आई हैं। हमें प्रत्येक प्रांत एवं शाखाओं से निवेदन करना चाहिए कि वे संस्कार-संस्कृति चेतना को लेकर कार्यक्रम का आयोजन करें। हमें सभी शाखाओं में इस उपसमिति का एक संयोजक बनाना चाहिए।

बैठक में उपस्थित श्रीमती बबिता अग्रवाल ने अपनी बात रखते हुए कहा कि बच्चों को चरित्र निर्माण की शिक्षा, बच्चों में जागरूकता, बच्चों में संस्कार-संस्कृति गर्व-बोध का शिक्षण बचपन से ही घर में शुरू करने की जरूरत है।

श्री राजेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि महिला शाखाओं के माध्यम से बच्चों को लेकर प्रेरक-कथाओं की दृश्य प्रस्तुति कक्षाएँ आयोजित करने की आवश्यकता है, जिससे उनमें हम बचपन में ही संस्कार-संस्कृति का निरूपण हो पाए।

बैठक में उपस्थित सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिव कुमार लोहिया ने सभी सदस्यों का अभिवादन करते हुए अपील किया कि आप अपने प्रांत और शाखाओं से संस्कार-संस्कृति की इस बैठक की चर्चा कर उनसे अनुरोध करें कि किसी भी तरह का सामाजिक कार्यक्रम हो तो उसमें बच्चों के लिए आधे घंटे का संस्कार-संस्कृति से जुड़ा कोई कार्यक्रम रखें। आप सभी से अनुरोध है कि आप उन विचारों को लिखकर केंद्रीय कार्यालय में भेजें तो उससे हमें एक दिशा मिलेगी कि हम कैसे आगे बढ़ें और क्या करें। साथ ही उन्होंने कहा कि हम घर की माताओं का कैसे शिक्षण करें कि वें बच्चों में सही संस्कार-संस्कृति दें सकने में सक्षम हों, इस पर हमें गहनता से विचार करना चाहिए।

उपसमिति के चेयरमैन श्री गर्ग ने कहा कि नवंबर माह में हम केंद्रीय स्तर पर संस्कार-संस्कृति पर एक कार्यक्रम का आयोजन करेंगे।

बैठक में सम्मेलन सभागार में उपस्थित थे श्री शिव कुमार लोहिया, श्री संदीप गर्ग, श्री राजेश कुमार अग्रवाल, श्री अमित मूंधड़ा एवं आभासीय पटल जूम के माध्यम से जुड़े थे श्री ओम प्रकाश पोद्दार, श्री अशोक कुमार अग्रवाल व श्रीमती बबिता अग्रवाल। बैठक के अंत में संस्कार-संस्कृति चेतना उपसमिति के संयोजक श्री राजेश कुमार अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

पुरस्कार चयन उपसमिति

२५ सितंबर २०२३ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के केंद्रीय कार्यालय के सभागार में पुरस्कार चयन उपसमिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता पुरस्कार चयन उपसमिति के चेयरमैन पद्मश्री **श्री प्रह्लाद राय अगरवाला** ने की। श्री अगरवाला ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए सम्मेलन द्वारा दिए जाने वाले सम्मानों के लिए नाम प्रस्तावित करने का अनुरोध किया। पुरस्कार चयन समिति के संयोजक **श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** ने बताया कि २५ दिसंबर को आयोजित होने वाले सम्मेलन के स्थापना दिवस पर प्रदान किए जाने वाले **'रामनिवास आशारानी लाखोटिया राजस्थानी व्यक्तित्व सम्मान - २०२२'** हेतु दो महानुभावों **श्री राधाकिशन दमानी** एवं **श्री देवेंद्र राज मेहता** के नाम के चयन को लेकर सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री शिव कुमार लोहिया** से चर्चा हुई।

इसके उपरांत चेयरमैन श्री अगरवाला ने **'सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य सम्मान'** के लिए नामों का प्रस्ताव माँगा। बैठक में उपस्थित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिव कुमार लोहिया ने इस सम्मान के लिए **श्री वंशीधर शर्मा** कोलकाता के नाम का प्रस्ताव रखा, जिसका **श्री रतन लाल जी शाह** ने अनुमोदन किया।

'केदारनाथ भागीरथी देवी कानोड़िया राजस्थानी भाषा बाल साहित्य सम्मान' के लिए **श्री मदन गोपाल लढा**, बीकानेर के नाम पर चर्चा हुई। सर्व सम्मति से समिति के चेयरमैन पद्मश्री प्रह्लाद राय अगरवाला को उपर्युक्त तीनों सम्मान के लिए निर्णय लेने के लिए अधिकृत किया। बैठक में सम्मेलन सभागार में उपस्थित थे **पद्मश्री श्री प्रह्लाद राय अगरवाला, श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, श्री शिव कुमार लोहिया, श्री कैलाशपति तोदी एवं आभासीय पटल जूम के माध्यम से जुड़े थे श्री रतन लाल साह, डॉ. श्याम सुंदर हरलालका, श्री पवन कुमार गोयनका व श्री कमल कुमार केडिया।**

बैठक के अंत में पुरस्कार चयन उपसमिति के संयोजक श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

हमारे नवनिर्वाचित शाखाध्यक्ष

शाखा : गुलाबबाग, बिहार

श्री ललित अग्रवाल

श्री ललित अग्रवाल जी का जन्म गुलाबबाग निवासी सुप्रसिद्ध व्यवसायी श्री रामअवतार अग्रवाल जी के यहाँ ०५ अगस्त १९७५ में हुआ। आप अपने परिवार में तीसरे पुत्र हैं। आपने माध्यमिक की शिक्षा गुलाबबाग उच्च विद्यालय, स्नातक की शिक्षा पूर्णिया कॉलेज, पूर्णिया से प्राप्त की। आप हमेशा से सामाजिक, राजनीतिक परिवेश एवं धार्मिक कार्यों से जुड़े रहे हैं। आप अभी रेड क्रॉस के सामाजिक कार्यों में समर्पित मनोभाव से अपनी सेवाओं के साथ ही जिला स्तर के सरकारी संस्थाओं में भी अपना योगदान दे रहे हैं।

शाखा : सरायकेला, झारखंड

श्री विष्णु अग्रवाल

श्री विष्णु अग्रवाल जी के पिता स्वर्गीय गणेश लाल अग्रवाल जी हैं। आपने बी.कॉम (स्नातक) तक की शिक्षा हासिल की है। आप कई व्यवसायों से जुड़े हैं यथा एयरटेल, अमूल, कोलगेट पामोलिव की एजेंसी एवं ठंडे पेय पदार्थों व पट खा के थोक विक्रेता हैं। आप कई समाजसेवा मूलक कार्यों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। आप अभी श्याम मित्र मंडल के कोषाध्यक्ष हैं।

शाखा : खरसावाँ, झारखंड

श्री अनूप कुमार अग्रवाल

झारखंड प्रांत के सरायकेला खरसावाँ जिला के अंतर्गत आने वाली खरसावाँ शाखा का गठन कर श्री अनूप कुमार अग्रवाल को निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। श्री अग्रवाल के पिताश्री श्री सत्यनारायण अग्रवाल हैं। आपने बी.कॉम (स्नातक) तक की शिक्षा प्राप्त की है। श्री अग्रवाल जी खाद्यान्न के थोक एवं खुदरा व्यवसायों से जुड़े हैं। आप अभी विश्व हिन्दू परिषद, कुचाई प्रखंड के अध्यक्ष हैं।

शाखा : विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

श्री सुभाष चंद्र गुप्ता

श्री सुभाष चंद्र गुप्ता जी की जन्मतिथि २५ अगस्त १९६१ है। आपने बी.कॉम. (स्नातक) की शिक्षा वर्ष १९८० में जी.बी. पोद्दार कॉलेज, नवलगढ़, राजस्थान से पूरी करने के बाद वर्ष १९८६ में प्लास्टिक स्क्रैप रीसाइक्लिंग का व्यवसाय शुरू करने के लिए राजस्थान से विजयवाड़ा आए। पिछले दो दशकों से आप समाजसेवा मूलक कार्यों में तन, मन से अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। आप अग्वाल समिति, विजयवाड़ा के कोषाध्यक्ष (२००४-०६, २००६-०८), प्लास्टिक स्क्रैप डीलर्स एंड मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन के संस्थापक अध्यक्ष (२००८-१२) और अध्यक्ष (२०२२-२४), पिछले १० वर्षों से राममंदिर सभा के कोषाध्यक्ष, श्याम सेवा मंडल के अध्यक्ष (२००९-११) और (२०२३-२५) के लिए पुन: अध्यक्ष बने हैं। अभी आप आंध्र प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की विजयवाड़ा शाखा के सत्र २०२३-२५ के लिए अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं।

प्रादेशिक समाचार : पश्चिम बंग

प्रांतीय अध्यक्ष बने श्री नंदकिशोर अग्रवाल

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में एक बार फिर से श्री नंदकिशोर अग्रवाल निर्वाचित हुए हैं। संविधान के तहत राष्ट्रीय सम्मेलन द्वारा गठित श्री गोपीराम धुवालिया के चेयरमैनशिप में गठित तदर्थ समिति ने मुख्य चुनाव अधिकारी के रूप में श्री मुकेश खेतान, सहायक चुनाव अधिकारी के तौर पर श्री नितिन अग्रवाल तथा श्री अजय अग्रवाल को नए अध्यक्ष का चुनाव करवाने हेतु नियुक्त किया था। निर्वाचन प्रक्रिया पूरी होने के बाद मुख्य चुनाव अधिकारी द्वारा सौंपी गई रिपोर्ट के आधार पर श्री नंदकिशोर अग्रवाल को सत्र २०२३-२५ के लिए निर्वाचित अध्यक्ष घोषित किया गया। इस मौके पर तदर्थ कमिटी के चेयरमैन श्री धुवालिया सहित संयोजक श्री संजय भरतिया, चुनाव अधिकारीगण सहित अन्य सदस्य श्री विश्वनाथ भुवालका, श्री पवन बंसल, श्री गोविंद पसारी, श्री पवन मुरारका, श्री संजय अग्रवाल, श्री दिनेश सिंघानिया, श्री अनिल डालनिया, श्री अशोक पुरोहित, श्री सुभाष गोयनका, श्री अनूप अग्रवाल व अन्य उपस्थित रहे। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिव कुमार लोहिया ने श्री अग्रवाल के निर्वाचित घोषित होने पर उन्हें बधाई संदेश प्रेषित किया। पश्चिम बंग की प्रादेशिक शाखाओं एवं सदस्यों द्वारा उन्हें बधाई देने वालों का तांता लग गया। सभी ने उम्मीद जताई कि श्री अग्रवाल के नेतृत्व में पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन समाज हित में और ज्यादा सराहनीय व उल्लेखनीय कार्य करेगा।

प्रादेशिक समाचार : दिल्ली

दिव्यांग सेवा

दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने माहेश्वरी सदन, राणा प्रताप कॉलोनी में दिव्यांग सेवा की। इस कार्यक्रम में प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री लक्ष्मीपत भूतोड़िया एवं अन्य पदाधिकारियों ने सेवा कार्य किया।

असम के राज्यपाल से पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के शिष्टमंडल की भेंट

४ अक्तूबर २०२३ को पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश चंद कावरा के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने असम के महामहिम राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया के साथ औपचारिक मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल में प्रांतीय अध्यक्ष के साथ प्रांत के शीर्ष पदाधिकारी प्रांतीय उपाध्यक्ष (मुख्यालय) श्री रमेश कुमार चांडक, प्रांतीय महामंत्री श्री विनोद कुमार लोहिया, कोषाध्यक्ष श्री अशोक अग्रवाल, संयुक्त मंत्री श्री मनोज काला एवं श्री पंकज पोद्दार शामिल थे। इस भेंटवार्ता में मारवाड़ी सम्मेलन के अंतर्गत गुवाहाटी में महिला छात्रावास बनाने तथा इसकी आवश्यकता पर चर्चा हुई। छात्रावास बनाने के लिए गुवाहाटी नगरपालिका के अंदर सरकार द्वारा जमीन उपलब्ध करवाने के लिए महामहिम को ज्ञापन सौंपा गया। महामहिम ने हर संभव मदद का आश्वासन दिया।

कार्यकारिणी समिति की बैठक संपन्न

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की तृतीय प्रांतीय कार्यकारिणी सभा का आयोजन बंदरदेवा व बंदरदेवा महिला शाखा के आतिथ्य में संपन्न हुआ। जिसका श्रेय विशेष रूप से बंदरदेवा शाखा के निवर्तमान शाखाध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक श्री ओम प्रकाश पचार व बंदरदेवा की दोनों शाखाओं के पदाधिकारियों तथा सदस्यों को जाता है। प्रतिनिधियों व प्रांतीय पदाधिकारियों ने श्रीश्री उत्तर कमलाबाड़ी सत्र के सत्राधिकार प्रभु एवं श्रीश्री माधवदेव जन्म स्थान लेटेकुपुखुरी परिचालना समिति के अध्यक्ष श्रीश्री जनार्दन देव गोस्वामी से उनके कार्यालय में जाकर आशीर्वाद लिया एवं पौधे लगाए।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में जनार्दन देव गोस्वामी ने दीप प्रज्वलित कर सभा का शुभारंभ किया। मुख्य अतिथि ने सभा को संबोधित करते हुए असम की संस्कृति में घुल गए मारवाड़ी समाज की प्रशंसा की, सभी की मंगलकामना की तथा प्रांतीय मुखपत्र 'सम्मेलन समाचार' के डिजिटल संस्कार के प्रथम अंक का विमोचन किया। गुरुदेव की उपस्थिति में प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश कावरा ने श्रीश्री माधव देव जन्मस्थान में स्थित नामघर के नव निर्माणाधीन मणिकूट के निर्माण कार्य में दस लाख रुपए तक के खर्च को वहन करने का आश्वासन दिया। साथ ही श्रीश्री माधवदेव लिखित पुस्तकों को प्रकाशित कर जन-जन तक पहुँचाने की बात कही। उद्घाटन सत्र का संचालन बिहपुरिया के सम्मेलन सदस्य श्री कमल बाहेती ने किया। इस सत्र में स्थानीय साहित्यकार श्री जुगल किशोर माहेश्वरी द्वारा लिखी गई पुस्तक मृगतृष्णा के लिए उनका सम्मान किया गया।

कार्यकारिणी बैठक प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश कावरा की अध्यक्षता में संपन्न हुई, जिसमें मंच पर प्रांतीय उपाध्यक्ष (मुख्यालय) श्री रमेश चांडक, प्रांतीय महामंत्री श्री विनोद कुमार लोहिया, प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री अशोक अग्रवाल, प्रांतीय संगठन मंत्री श्री विमल अग्रवाल प्रांतीय संयुक्त मंत्री श्री बिरेन अग्रवाल, संयुक्त मंत्री एवं दानपत्र योजना के संयोजक श्री मनोज काला, मंडल-'ग' के प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री छत्तर सिंह गिरिया, प्रांतीय सहायक मंत्री श्री राज कुमार सराफ, आतिथ्य शाखा के अध्यक्ष श्री हीरालाल अग्रवाल, श्रीमती माया सराफ एवं शाखा मंत्री श्री प्रमोद अग्रवाल एवं श्री ममता पारीक। प्रांतीय अध्यक्ष ने सम्मेलन के स्थापना दिवस पर सभी शाखाओं को मेगा रक्तदान शिविर आयोजित कर नए रक्तदान दाताओं को तैयार करने का आह्वान किया। साथ ही साथ मरणोपरांत नेत्रदान के प्रति जागरूकता अभियान चलाते हुए समाज परिवारों से संकल्प पत्र भरवाने के मुहीम चलाने का अनुरोध किया। असमिया मारवाड़ी समाज को अपने तीज-त्योहार पर्व के साथ स्थानीय पर्व भी उतने ही चाव से मनाने तथा अंश ग्रहण करने के प्रति जागरूक किया। महामंत्री ने पिछली कार्यकारिणी सभा का प्रतिवेदन रखा। प्रांतीय उपाध्यक्ष (मुख्यालय) ने शाखाओं द्वारा त्रैमासिक रिपोर्ट समय पर नहीं मिलने पर असंतोष व्यक्त किया। प्रांतीय संगठन ने बताया की प्रांत ने ५००० आजीवन सदस्यों के जादुई आँकड़े को छू लिया है। उन्होंने प्रशासनिक सुविधा के लिए प्रांत के सभी मंडलों के नाम क्रमशः क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ को बदलकर अंग्रेजी नाम ए, बी, सी करने का प्रस्ताव रखा, जिसे सभा ने सर्व सम्मति से पारित किया।

भाग्यशाली दान पत्र योजना के संयोजक ने दान पत्र के वितरण की प्रगति के बारे में बताया। उन्होंने शाखाओं को मजबूत करने के लिए भाग्यशाली दानपत्र योजना का सुलाभ उठाने का आह्वान किया। मारवाड़ी शोध कार्य समिति के संयोजक श्री उमेश खंडेलिया ने अपनी रिपोर्ट के माध्यम से गोलाघाट स्थित सती साधनी राज्यिक विश्वविद्यालय से हुए करार की विस्तृत जानकारी देते हुए भविष्य की चुनौतियों के लिए सभी के सहयोग का आवाह्न किया। विश्वविद्यालय से करार के लिए उनको सम्मानित किया गया। जनसेवा समिति की रिपोर्ट प्रांतीय उपाध्यक्ष (मुख्यालय) ने रखते हुए लेपेटकाटा में हुए दुर्घटना के बाद बालक नमन के इलाज के लिए समाज-बंधुओं एवं शाखाओं के खुले मन से सहयोग की प्रशंसा की।

सदस्यता विस्तार के लिए गुवाहाटी शाखा की अध्यक्ष श्रीमती संतोष शर्मा, बंगाईगाँव शाखा के अध्यक्ष श्री राजेंद्र हरलालका एवं कामरूप शाखा के अध्यक्ष श्री दिनेश गुप्ता को सम्मानित किया। अति सुंदर आतिथ्य के लिए दोनों शाखाओं के अध्यक्ष, मंत्री सहित संयोजक श्री ओम प्रकाश पचार को सम्मानित किया। मंच पर पूर्व प्रांतीय महामंत्री श्री राज कुमार तिवारी का राष्ट्रीय राजनीतिक चेतना उप-समिति में सदस्य मनोनीत होने, सोनारी से श्री अनूप कुमार राजपुरोहित को प्रांतीय सलाहकार मनोनीत करते हुए उनका सम्मान किया। उद्घाटन सत्र के संचालक श्री कमल बाहेती को सफल संचालन हेतु एवं श्री रमेश चांडक को ९२ बार रक्तदान हेतु महामहिम राज्यपाल द्वारा सम्मान प्राप्त करने पर अभिनंदन किया गया। साथ ही स्थानीय नारायणपुर के मेयर श्री हरीश चांडक एवं पार्षद श्रीमती माया चांडक को सम्मानित किया गया। मंडलों के उपस्थित प्रांतीय उपाध्यक्षों ने अपनी अपनी रिपोर्ट सदन में रखी।

सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी जी के ज्येष्ठ पुत्र-पुत्रबधू उभंग/शालू के पुत्र रत्न प्राप्ति एवं श्री तोदी जी के दादा बनने पर हार्दिक बधाई!

प्रादेशिक समाचार : कानपुर, उत्तर प्रदेश

डांडिया उत्सव संपन्न

उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, कानपुर द्वारा एम.वी.आर ग्रैंड होटल, साकेत नगर में डांडिया रास उत्सव धूमधाम से मना। माँ दुर्गा की पूजा-अर्चना सभी पदाधिकारियों द्वारा की गई। तत्पश्चात मुख्य अतिथि अपर सहायक पुलिस उपायुक्त दक्षिण, सुश्री अंकिता शर्मा का सम्मान किया गया। लखनऊ डी.जे. कुमांशी ग्रुप द्वारा राजस्थानी घूमर प्रस्तुत किया गया। उद्घोषक का कार्य लखनऊ से आई सुश्री आकृति ने किया। मारवाड़ी समाज के सदस्यों ने राजस्थानी परिधानों में सज-धज कर उत्साह से डांडिया प्रतियोगिता में भाग लिया। डांडिया में बेस्ट कपल श्री सुशील जैन जी को चुना गया। सभी विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। विशेष आकर्षम लकी ड्रा का भी रहा, जीतने वालों ने लकी ड्रा के भी पुरस्कार प्राप्त किए। मारवाड़ी सम्मेलन शाखा अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश अग्रवाल ने कहा कि हमें हर क्षेत्र में मारवाड़ी समाज को आगे बढ़ाना है। उपाध्यक्ष श्री बालकृष्ण देवड़ा, कोषाध्यक्ष श्री महेंद्र लडिया ने आए हुए सभी सदस्यों अतिथियों का स्वागत किया। विशेष आमंत्रण पर प्रांतीय अध्यक्ष श्री श्रीगोपाल तुलस्यान एवं महामंत्री श्री टीकम चंद सेठिया भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। संयोजक श्री रोहित तुलस्यान, श्री विशाल जैन उपस्थित रहे। मंच संचालन का कार्य महामंत्री श्री प्रदीप केडिया, महिला शाखाअध्यक्ष श्रीमती आशा केडिया, महामंत्री श्रीमती मोनिका तुलस्यान, श्रीमती विनीता अग्रवाल, श्रीमती साधना देवड़ा ने किया। उपस्थित लोगों में सभी सम्मानित सदस्य और पदाधिकारी के अलावा अन्य अतिथि मौजूद रहे।

प्रादेशिक समाचार : बिहार

४०० लोगों की हुई नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच

व्यापार संघ सुपौल व बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की सुपौल शखा के संयुक्त तत्वावधान में नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया। जिला मुख्यालय स्थित व्यापार संघ भवन में व्यापार संघ के अध्यक्ष श्री अमर कुमार चौधरी एवं बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रदेश अध्यक्ष श्री युगल किशोर अग्रवाल ने संयुक्त रूप से फीता काटकर जाँच शिविर का शुभारंभ किया। शिविर में पटना से आए प्रमुख न्यूरो सर्जन डॉक्टर ज्ञान रंजन, ऑर्थो सर्जन डॉक्टर मनी आनंद, मेदांता ग्रुप के डॉ. सदाशिव पांडे एवं सदर अस्पताल सुपौल में कार्यरत डॉ. विकास कुमार ने अपनी टीम के साथ लोगों की स्वास्थ्य जाँच कर उन्हें चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराई। इनके अलावा कोसी नेत्रालय पुलिस लाइन भेलांही से डॉ. मुकेश कुमार सिंह और नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप शर्मा ने शिविर में अपने सहयोगियों के साथ रोगियों की नेत्र जाँच की। जाँच के उपरांत रोगियों के बीच मुफ्त दवा का वितरण भी किया गया। इस दौरान यह भी बताया गया कि कोशी नेत्रालय द्वारा मोतियाबिंद या आँख की परेशानी से पीड़ित रोगियों का नि:शुल्क ऑपरेशन समस्तीपुर में कराए जाने की योजना है। व्यापार संघ में आयोजित जाँच शिविर में ४०० से अधिक शहर वासियों ने अपने स्वास्थ्य की जाँच कर उचित डॉक्टरी सलाह प्राप्त किया। शिविर को लेकर व्यापार संघ के अध्यक्ष ने कहा कि "संगठन का यह सपना है हर पराया दर्द अपना है।" इसी थीम के आधार पर हम बराबर इस तरह के शिविर का आयोजन करते रहेंगे, ताकि शहरवासी स्वस्थ्य रह सकें, शिविर को सफल बनाने में शाखा अध्यक्ष सर्वश्री रमेश कुमार मिश्रा, सचिव राजेश मोहनका, संयोजक दीपक अग्रवाल, संजय अग्रवाल, व्यापार संघ के बलराम कामत एवं संजय कुमार ने अपनी अहम भागीदारी निभाई। मौके पर सम्मेलन के प्रमंडलीय उपाध्यक्ष सर्वश्री पवन अग्रवाल, सुब्रत मुखर्जी, रामकुमार चौधरी, रमेश कुमार मिश्रा, विनोद जैन, मातादीन अग्रवाल, उमेद जैन सहित सैंकड़ों शहरवासी उपस्थित रहे।

प्रादेशिक समाचार : दिल्ली

भंडारा का आयोजन

१६ अक्तूबर को दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा दिल्ली पीतमपुरा स्थित शिव शक्ति मंदिर प्रांगण में भंडारा का आयोजन किया गया। दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री लक्ष्मीपत भूतोडिया जी के द्वारा विशाल भंडारे का शुभारंभ हुआ। इस दौरान सैकड़ों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।

प्रादेशिक समाचार : आंध्र प्रदेश

पर्यावरण सुरक्षा हेतु अभिनव पहल

प्रकृति ही परमेश्वर है। ज्यादातर मूर्तियां पीओपी की बनी होती हैं जो पानी में जल्दी नहीं घुलती हैं। इससे पर्यावरण प्रदूषित होने लगता है। ये मूर्तिया दिखने में तो भले ही अच्छी हो, लेकिन यह पर्यावरण को काफी नुकसान पहुंचाती हैं। आंध्र प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री पोडेश्वर पुरोहित ने सभी लोगों से आह्वान किया कि गणेश उत्सव पर पूजा के लिए पीओपी मूर्तियों की जगह ईको फ्रेंडली पर्यावरण अनुकूल मिट्टी की गणेश मूर्तियों का उपयोग करें। १६ सितंबर को उन्होंने जगदंबा जंक्शन पर मिट्टी के गणेश जी की प्रतिमा के मुफ्त वितरण के कार्यक्रम की शुरुआत की। क्षेत्र के लोगों को मिट्टी की मूर्तियां दी गई। श्री पोडेश्वर ने आगे कहा कि मिट्टी को विसर्जित करने पर पानी प्रदूषित नहीं होता है। प्लास्टर और पेरिस से बनी मूर्तियों में रसायन मिला होता है, इसलिए जब उन्हें विसर्जित किया जाता है तो पानी दूषित हो जाता है और जीव-जंतुओं को नुकसान पहुंचता है। इस पर सभी को ध्यान देना चाहिए। इससे खासकर कुम्हार कारीगरों को रोजगार के बेहतर अवसर मिलेंगे। विशाखापत्तनम मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री बिजेंद्र गुप्ता, कोषाध्यक्ष श्री राजेश बंसल, सेव टेम्पल्स के श्री पिन्नामनेनी श्रीनिवास, जे डी फाउंडेशन के श्री एस. कृष्णैया, स्टप इन के श्री होलप वर्मा दाठला, उत्तरांध्र पत्रकार मोर्चा अध्यक्ष डॉ. एम. आर. एन. वर्मा, वरिष्ठ पत्रकार श्री एम. युगांधर रेड्डी, श्री डी. हरनाथ, श्री ओम प्रकाश राजपुरोहित, श्री अभय सिंह राजपुरोहित, श्री गोविंद दर्जी ने भाग लिया।

प्रादेशिक समाचार : सिक्किम

राहत सेवा शिविर

सिक्किम में ४ अक्तूबर को अचानक बादल फटने से आए बाढ़ ने भारी तबाही मचाई है, इस तबाही में काफी जन-हानि हुई है। इस दुखद घटना को देखते हुए लोगों की सहायता के लिए प्रभावित इलाके में सिक्किम प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा राहत शिविर लगाकर लोगों तक खाद्यान की आपूर्ति, पीने का पानी, कपड़े, रोजमर्रा की चीजों का वितरण किया जा रहा है। प्रांतीय अध्यक्ष श्री रमेश कुमार पेड़ीवाल ने बताया कि बहुत जगहों से सहायता सामग्री भी मिल रही हैं। समाज के काफी सदस्य इस कार्य में लगे हैं। उन्होंने आगे कहा कि सिक्किम राज्य में आए इस दैवीय आपदा में संगठन के लोगों द्वारा लगातार फोन कर कुशलक्षेम की जानकारी लेना एवं लगातार संदेश पाकर अभिभूत हूँ, सभी को आभार।

उपलब्धियाँ

फुसरो (बेरमो) के व्यवसायी एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के आजीवन सदस्य श्री शंकर अग्रवाल की बेटी ने एमबीबीएस की परीक्षा उत्तीर्ण की।

बोंगाईगांव के श्री ज्ञानचंद जैन ने गुवाहाटी के अठगांव में मारवाड़ी अस्पताल के ब्लड बैंक में १११वीं बार रक्तदान कर रिकॉर्ड बनाया है। कुछ ही दिन पहले उनके उल्लेखनीय ११० वें रक्तदान के लिए असम के राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया द्वारा उनकी सराहना की गई थी।

सिर्फ पंद्रह साल के अर्नव डागा ने कोलकाता की चार ऐतिहासिक इमारतों-राइट र्स बिल्डिंग, शहीद मीनार, साल्टलेक स्टेडियम और सेंट पॉल कैथेड्रल का स्ट्रक्चर १,४३,००० ताश के पत्तों से बिना कहीं भी टेप या गोंद का इस्तेमाल किए ४१ दिनों में बना कर कमाल कर दिया है। अर्णव ने ब्रायन बर्ग का पिछला विश्व रिकॉर्ड तोड़ते हुए गिनीज बुक में नाम दर्ज करवाया है।

इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्डस में नाम दर्ज

पाँच वर्षीय रियाश चौधरी ने दो मिनट ४९ सेकेंड में उसने १९५ देशों के ध्वज की पहचान चार्ट पेपर पर कर इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्डस में अपना नाम दर्ज करवाया है। रियांश पंखुरी-सुमित चौधरी के पुत्र हैं।

गुवाहाटी की नौ वर्षीय बच्ची समायरा जैन ने यह रिकॉर्ड ६ मिनट २३ सेकेंड में ८०० हुला हॉपिंग स्पिन कमर के चारों ओर घूमाकर संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त १९५ देश की राजधानियों के नाम बता कर रिकॉर्ड बनाया है। समायरा जैन गुवाहाटी निवासी अभिषेक, प्रियंका जैन की पुत्री हैं।

शाखा समाचार

साकची, झारखंड

अंताक्षरी कार्यक्रम संपन्न

मारवाड़ी सम्मेलन साकची शाखा द्वारा १० अक्तूबर २०२३ को भव्य अंताक्षरी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में ५१ प्रतिभागियों ने १७ टीम बनाकर अंताक्षरी में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया एवं कार्यक्रम का भरपूर आनंद उठाया। प्रतिभागियों के अलावे भारी संख्या में करीब पाँच-छह सौ समाज की महिलाएं, पुरुष एवं बच्चों ने भी कार्यक्रम का आनंद उठाया। सभागार में बैठे दर्शकों को भी गाना गाने पर सरप्राइज गिफ्ट दिया गया। राजस्थानी वेशभूषा में आने वाले सदस्यों को प्रथम द्वितीय और तृतीय पुरस्कार देकर एवं मारवाड़ी गीत गाने वाले टीमों को दस नंबर ज्यादा देकर मारवाड़ी भाषा को बढ़ावा देने का कार्य भी किया गया। अंताक्षरी कार्यक्रम में उम्दा प्रदर्शन करने वाली टीमों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बाकी सभी प्रत्याशियों को भी सांत्वना पुरस्कार देकर उनका उत्साह बढ़ाया गया। कार्यक्रम के बाद सभी समाज-बंधुओं ने आयोजित सहभोग का आनंद उठाया। कार्यक्रम में शाखाध्यक्ष श्री सुरेश कुमार काँवटिया, महामंत्री श्री अभिषेक अग्रवाल गोल्डी एवं कोषाध्यक्ष सन्नी संघी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

शाखा समाचार

सूरत, गुजरात

स्वच्छता के लिए श्रमदान

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात के १०५वें एपिसोड में १ अक्तूबर को सुबह १० बजे सभी नागरिकों द्वारा सामूहिक रूप से स्वच्छता के लिए १ घंटे के श्रमदान की अपील की थी, जो गांधी जयंती की पूर्व संध्या पर बापू को 'स्वच्छांजलि' होगी। स्वच्छता की इसी सेवा भावना से गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सूरत जिला अध्यक्ष श्री सुशील अग्रवाल के नेतृत्व में 'स्वच्छता के लिए श्रमदान' कार्यक्रम आयोजित कर जिला पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा श्रमदान किया गया।

शाखा समाचार

नई शाखा का स्वागत

सिनी शाखा का गठन

१८ सितंबर को झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन, सराईकेला जिला अध्यक्ष श्री प्रदीप चौधरी ने सिनी शाखा का गठन किया। इस शाखा में श्री पूरन अग्रवाल (अध्यक्ष), श्री राकेश अग्रवाल (उपाध्यक्ष), श्री दीपक अग्रवाल (सचिव) एवं श्री अनिल अग्रवाल को कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई। सिनी शाखा के पदाधिकारियों के शपथ की प्रक्रिया के पश्चात श्री प्रदीप चौधरी ने सभी पदाधिकारियों को शुभकामनाएं दीं।

सिलापथार, पूर्वोत्तर

गर्भवती महिलाओं को सरकारी सुविधाओं की जानकारियाँ

मारवाड़ी सम्मेलन की सिलापथार महिला शाखा ने गर्भवती महिलाओं एवं नवजात शिशु के टीकाकरण एवं सरकार के द्वारा दी गई सुविधाओं के विषय में एक सत्र रखा। यह कार्यक्रम दुर्गा देवी संचेती के नेतृत्व में उनके निवास स्थान पर हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत ज्योति शर्मा, आरती संचेति, मोनिका संचेती एवं रीतु तातेड़ के द्वारा द्वीप प्रज्वलन एवं गणेश वंदना से हुई। उसके बाद आरती संचेती एवं मोनिका संचेती ने अतिथियों के लिए स्वागत गीत गाए। यह सेशन करवाने के लिए सिलापथार की ए.एन.एम, मारग्रेट राज, पालपट्टी क्षेत्र की आशा कविता दिहिंगिया, नूतन मिसिंग गांव की आशा अवंती डोले उपस्थित थी। इनका स्वागत चंदा देवी तातेड़, इंदिरा देवी डागा, शाखा उपाध्यक्ष रत्ना देवी तोषनीवाल, इंदिरा देवी संचेती, पुष्पा देवी मालू, इंदिरा देवी अंचलिया के द्वारा तिलक करके एवं फुलाम गमछा के द्वारा किया गया। फिर सिलापथार की ए.एन.एम, मारग्रेट राज ने गर्भवती महिलाओं एवं नवजात शिशु के विषय में कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां दीं। उन्होंने बताया कि गर्भवती महिलाओं के गर्भावस्था के नौ महीने के तीन ट्राइमेस्टर होते हैं।

सिलापथार के पालपट्टी क्षेत्र की आशा कविता दिहिंगिया ने बताया कि मारवाड़ी समाज, सरकार द्वारा दी गई सुविधाओं का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं, जानकारी के अभाव के कारण प्राइवेट हॉस्पिटल में चले जाते हैं, जबकि सरकार सभी सुविधा व टीकाकरण निःशुल्क उपलब्ध करवा रही है। मंच संचालन महिला शाखा की सचिव ऋतु डागा ने किया। मौके पर महिला शाखा की अध्यक्षा प्रिया चांडक ने कहा कि हमें गर्भवती महिलाओं की रिपोर्टिंक करनी चाहिए और जो सुविधाएं हमें सरकार से मिल रही है उन सुनिधाओं का लाभ लेना चाहिए। प्रिया चांडक ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

बरपेटारोड, पूर्वोत्तर

१२ साहित्यकारों का सम्मान

मारवाड़ी सम्मेलन बरपेटारोड शाखा द्वारा स्व. छगनलाल जैन की स्मृति में उनके जन्मशताब्दी वर्ष पर बरपेटा जिले के सरभोग में १२ साहित्यकारों का सम्मान किया गया।

असमिया मारवाड़ी समाज में प्रतिष्ठित, सामाजिक सरोकारों से वास्ता रखने वाले एवं साहित्य सृजन के साथ पत्रकारिता के प्रति अनुराग रखने वाले, जन्मभूमि असम के प्रति अत्यंत लगाव रखने वाले, हम सभी के श्रद्धेय स्व. छगनलाल जैन (पांडु, गुयाहाटी निवासी) को पुण्यतिथि पर आज उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि स्वरूप बरपेटारोड मारवाड़ी सम्मेलन शाखा ने बरपेटा जिले के साहित्यकारों को सम्मानित करने का निर्णय लिया है। स्व. छगनलाल जैन का जन्म शतवार्षिक वर्ष चल रहा है। इसी कड़ी में सर्वप्रथम मंगलवार को मारवाड़ी सम्मेलन बरपेटारोड शाखा एवं सरभोग मारवाड़ी समाज के सदस्यों द्वारा सरभोग के राष्ट्रीय एवं असम में सम्मानित १२ साहित्यकारों के घर जाकर प्रशस्ति-पत्र, असमिया फुलाम गामोछा एवं सम्मेलन का साहित्य भेंट देकर उनका सम्मान किया गया। इनमें कार्व्यानल, रमेश चंद्र भट्टाचार्य, टिकन नाथ, रंजीत दास, डॉ. रीता दास, उद्यानंद दास, दिनेश चंद्रनाथ, सुमिरन मजुमदार, प्रफुल्ल नाथ, कीर्तन दास, नीलिमा बेगम, विष्णु प्रसाद दास शामिल हैं। मारवाड़ी सम्मेलन बरपेटारोड शाखा के सलाहकार नागरमल शर्मा, हरिकिशन माहेश्वरी, रामेश्वरलाल माहेश्वरी अध्यक्ष, सुरेश कुमार चौधरी उपाध्यक्ष, अरुण कुमार जैन सचिव, प्रमोद कुमार अग्रवाल एवं सम्मेलन के सदस्यों का सक्रिय योगदान रहा। सम्मान प्राप्तकर्ता साहित्यकारों ने सम्मेलन को हृदय से धन्यवाद देते हुए प्रसन्नता व्यक्त की। साहित्यकारों के सम्मान का यह सिलसिला जारी रहेगा।

कविता

मुस्करानो जरुरी है

लक्ष्मण कुमार नेवटिया

मुसीबतां कै मस्तुल पै चढ
विश्वास फहरानो जरुरी है,
जिका झूंठा आपाणै थर्कावै
उणा नै हराणो जरूरी है,
किसी बी कोई आओ बाधा
उणै आपां पगतल्यां में रांधा,
रोणो तो भगवान ई सीखा कै भेजै
मुस्करानो जरुरी है।

खा'र पहाड मारो दहाड

बुफे पार्टी कि हरेक लाइनमें घूसो क्यूं
हरेक पकवान खाओ चुस्की चूसो क्यूं
चुसै सा हो'र खाओ पहाड़ मारो दहाड़
बात म्हारी साची है तो फेरुं गुस्सो क्यूं।

पश्चिम बंगाल के सदस्यों से अनुरोध

आमरी हॉस्पिटल्स (कोलकाता के तीन हॉस्पिटल्स एवं भुवनेश्वर के एक हॉस्पिटल) एवं ए.एम. मेडीकल प्राइवेट लिमिटेड के साथ मिलकर पश्चिम बंगाल के सभी सदस्यों के लिए विविध स्वास्थ्य देखभाल एवं स्वास्थ्य जाँच शिविर के लिए साझेदारी की है, इस सुविधा के तहत सभी डे-केयर सर्जरी पर 15% की छूट एवं अन्य सर्जरी रियायती दरों पर होगी। इसके लिए आमरी हॉस्पिटल्स सम्मेलन के सदस्यों को एक 'प्रिविलेज कार्ड' दे रहा है। इसका लाभ पश्चिम बंगाल एवं उड़ीसा प्रांत के सम्मेलन सदस्य ले सकते हैं।

नोट : पश्चिम बंगाल के सदस्यों से निवेदन है कि अपना **'प्रिविलेज कार्ड'** सम्मेलन के केंद्रीय कार्यालय से संग्रह कर लें।

दस्तावेज

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का सप्तम अधिवेशन (१९३५)

समाज के आमूल परिवर्तन की आवश्यकता

(ले. श्री ईश्वरदास जालान)

(गतांक से आगे...)

राजनीति से उदासीनता

इसके अतिरिक्त इस बात की भी आवश्यकता है कि समाज का प्रत्येक स्त्री-पुरुष जिसे मत देने का अधिकार है वह अपना नाम मतदाता की सूची में सम्मिलित करावें। पिछले चुनाव में मेरा यह अनुभव था कि एक मकान में जहाँ चार-पाँच सौ मतदाता की तालिका में शामिल होने वाले मनुष्य थे वहाँ केवल पाँच-सात ही उसमें थे। जब तक समाज में एक राजनैतिक जागृति नहीं होगी तब तक उनकी यह उपेक्षा बनी रहेगी। यदि ये मतदाता होंगे तो चाहे जो भी धारा सभाओं के लिए खड़े होंगे, चाहे वे इस समाज के हों अथवा किसी अन्य समाज के, इनकी कद्र करेंगे। हमारे विधान के अनुसार प्रतिवर्ष मतदाता सूची नए सिरे से तैयार होती है। किंतु, आज समाज में कितने मनुष्य हैं, जो इस बात को जानते है या इस ओर कोई प्रयत्न करते हैं। इसके लिए भी हमें संगठित प्रयत्न की आवश्यकता है। वर्तमान जगत में इस अधिकार से जो अपने को वंचित रखता है वह अपने लिए, देश के लिए और समाज के लिए हानि करता है। यह समाज व्यापार प्रधान समाज है। व्यापार का जो अनुभव इस समाज के व्यक्तियों को है उतना औरों को नहीं हो सकता है। भारतवर्ष के लिए आर्थिक समस्या ही वर्तमान की समस्या है। किस तरह देश समृद्धशाली हो, किस तरह यहाँ का व्यापार और वाणिज्य बढ़े, किस तरह इस देश के मनुष्यों की आर्थिक स्थिति सुधरे, इसमें इस समाज के प्रतिनिधि यदि योग्य हुए और दिलचस्पी लें तो वे अपने अनुभव के आधार पर देश का बहुत भला कर सकते हैं। इन सब बातों के लिए हमें समाज के मनुष्यों को सिखलाना होगा कि वे योग्यतापूर्वक किस तरह राजनैतिक जीवन में भाग ले सकते हैं। ऐसे सज्जनों को इन धारा सभाओं में भेजने का समय नहीं रहा जो वहाँ के कार्यों में दिलचस्पी न लें। यदि यह समाज जीवित रहना चाहता है तो इसे इस ओर ध्यान देना होगा अन्यथा ये समय की द्रुतगति से बदलने वाले वातावरण में बहुत पीछे रह जाएंगे और प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में विकास करने का जन्मसिद्ध अधिकार है उससे भी वंचित हो जाएंगे।

सार्वजनिक जीवन का अभाव

केवल राजनीतिक में ही नहीं हमारे यहाँ सार्वजनिक जीवन में योग्यतापूर्वक माँग लेने वाले सज्जनों का सर्वथा अभाव है। जब हम आँख पसार कर देखते हैं तो कितने ही प्रांतों में एक मनुष्य भी ऐसा नहीं दिखाई देता जिसके विषय में हम कह सकें कि यह उस प्रांत के सार्वजनिक जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। एक दो प्रांतों की बात मैं नहीं कहता। जिन स्थानों में सैकड़ों घरों की बस्ती है। वहाँ एक भी मनुष्य ऐसा नहीं मिलता जो सार्वजनिक जीवन में प्रभाव रखता हो या उसे ठीक तरह से चला सकता हो। हमारी संस्थाएँ भी इस अभाव से फीकी बनी रहती हैं। परिणाम यह होता है कि संस्थाएँ मृतप्राय रहती हैं। मैं यदि इस कलकत्ते को ही लूँ और विभिन्न संस्थाओं की ओर निगाह डालूँ तो मुझे यह अभाव खटकता है। मेरी धारणा है कि समाज के मनुष्यों में सार्वजनिक जीवन के प्रति प्रेम उत्पन्न करना अत्यंत आवश्यक है। यह प्रेम किस तरह किया जाय, किस तरह हम उन्हें योग्य बना सकें, इसके लिए हमें सोचना होगा। मेरी यह कल्पना है कि देश के विभिन्न भागों में इस बात की उत्कट अभिलाषा रहती है कि समाज के सार्वजनिक जीवन में जो भाग लेते हैं वे उन स्थानों में जाएँ और ऐसा भी मेरा अनुभव है कि कार्यकर्ताओं का दल जब विभिन्न स्थानों में जाता है तो उसका प्रभाव विभिन्न स्थानों में बहुत अधिक पड़ता है। वहाँ के नवजवानों में भी स्फूर्ति आती है, नवजीवन का संचार होता है और उन्हें भी बोलने का व्यवहार करने का सार्वजनिक जीवन का अनुभव प्राप्त होता है। ऐसे यदि दस पाँच दल हम बराबर देश के विभिन्न भागों में भेज सकें तो मेरा विश्वास है कि थोड़े अच्छे सार्वजनिक कार्यकर्ता उनमें से अवश्यमेव निकल सकेंगे। ऐसे दौरों में केवल मार्ग व्यय की आवश्यकता होती है। कार्यकर्ताओं से यह आशा करनी कि वे अपने पास से खर्च कर इस तरह के दौरे पर जाएँ और इन दौरों के कारण विभिन्न स्थानों में व्यायामशालाएँ, पुस्तकालय, पाठशालाएँ तथा अन्य सार्वजनिक संस्था कायम हों और लोगों में जागृति हो जो कि सर्वथा संभव है तो समाजोत्थान में लाखों रुपये व्यय हो सकते हैं। यह कार्य भी बिना संगठन के संभव नहीं होगा।

राजनीतिक विषयों में सम्मेलन की नीति

देश में जो विभिन्न राजनीतिक दल है उनमें इस समाज के व्यक्ति अपने विचारों के अनुसार काम करते हैं और इस दल में समाज का कौन व्यक्ति होगा यह उसकी इच्छा पर निर्भर करता है। सम्मेलन अपनी ओर से कोई भी उम्मीदवार किसी चुनाव में खड़ा करना नहीं चाहता और न कोई राजनीतिक विशेषाधिकार ही चाहता है। समाज के विभिन्न राजनीतिक विचारों के मनुष्य इस संगठन में रह सकें, इसलिए यह जरूरी है कि सम्मेलन राजनीतिक दलबंदी से बिलकुल पृथक रहे। यह तो केवल समाज में राजनीतिक जीवन से प्रेम उत्पन्न करना ही अपने कर्मक्षेत्र के अंतर्गत समझा जाता है। यह तो इतना ही चाहता है कि भारतवर्ष के प्रत्येक नागरिक का जो मताधिकार है उसकी ओर समाज की तरफ से उपेक्षा न हो और समाज के पुरुष राजनीतिक प्रतिष्ठानों में अपने-अपने विचार को कायम रखते जाएँ और योग्यता पूर्वक अपने कर्तव्य को वहाँ निबाहें।

(श्रोत : अ.भा.मा. सम्मेलन के अधिवेशन के अवसर पर प्रसारित 'वर्तमान युग और मारवाड़ी समाज')

आगे जारी...

Yours Tastefully
Anmol
हर पल अनमोल
हर घर अनमोल
www.anmolindustries.com | Follow us on:

Apollo
TOUCHING LIVES

Certificate No. : M-0342
NABL Accredited

Apollo Clinic
Expertise. Closer to you.

P-72, Prince Anwar Shah Road, Opp. South City Mall, Kolkata-700 045
Tel. : 4021-2525-55, E-mail : pashahroad@theapolloclinic.com

SERVICES AT A GLANCE

- **Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments**
- **Radiology**
  - MRI / CT / Scan | - Digital X-Ray
  - Ultrasonography | - Colour Doppler Study
- **Cardiology**
  - ECG | - Echo-Cardiography
  - Echo-Colour Doppler | - Holter Monitoring
  - Treadmill Test (TMT)
- **Wide Range of Pathology**
- **Pulmonary Function Test**
- **UGI Endoscopy / Colonoscopy**
- **Physiotherapy**
- **EEC / EMG / NCV**
- **General & Cosmetic Dentistry**
- **Elder Care Service**
- **Sleep Study (PSG)**
- **EYE / ENT Care Clinic**
- **Gynae and Obstetric Care Clinic**
- **Haematolgy Clinic**
- **Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep**
- **Health Check-up Packages**
- **Online Reporting**
- **Report Delivery**

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 97481-22475

98301 96659

Consultation I Diagnostics I Dentistry I Health Checks

सम्मेलन का साधारण अधिवेशन (१९३५)

(गतांक से आगे...)

सभापति का भाषण

क्योंकि कवि कालिदास ने कहा है :

"पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परिक्ष्यांतरद्भजन्ते मूढः पर प्रत्ययेन बुद्धिः।।"

पुरानी होने से ही कोई वस्तु न अच्छी होती है और न नई होने से ही खराब होती है। जो विवेकशील होते हैं वे किसी वस्तु की अच्छी तरह परीक्षा करके तब उसे ग्रहण करते हैं और जो मुर्ख होते हैं वे केवल दूसरों पर विश्वास करके उसी बुद्धि से किसी मत को ग्रहण करते हैं।

वाणिज्य-व्यवसाय

मारवाड़ी समाज की जीविका एवं अर्थोपार्जन का मुख्य साधन वाणिज्य-व्यवसाय है। वाणिज्य-व्यवसाय को लेकर ही हमारी जाति के लोग भारत के भिन्न-भिन्न भागों में फैले हुए हैं और नाना प्रकार के व्यवसाय तथा उद्योग धंधों द्वारा जीविकोपार्जन कर रहे हैं। हमारे पूर्वजों ने अपनी जन्मभूमि राजस्थान का परित्याग कर जिस समय भारत के सुदूर प्रदेशों की यात्रा की थी उस समय उनका एक मात्र साधन-संबल उनकी सहज व्यवसाय-बुद्धि, परिश्रम, सचाई, ईमानदारी, उद्योगशिलता एवं कर्मनिष्ठा थी। अपने इन गुणों की बदौलत ही उन्होंने सुदूर प्रांतों में रहते हुए भी लाखों-करोड़ों की संपत्ति अर्जित की और उन्हीं के परिश्रम की कमाई का आज हम बहुत अंशों में उपभोग कर रहे हैं। अबतक हम अपने पूर्वजों का अनुशरण करते हुए उसी पुराने ढंग से व्यापार करते आ रहे थे; किंतु अब बदली हुई परिस्थिति ने हमें इस बात के लिए बाध्य किया है कि हम नई परिस्थितियों का सामना करते हुए, जीवन-संग्राम में सफलता प्राप्त करने के लिए वाणिज्य-व्यवसाय के नए-नए तरीकों को अपनावें और उनसे लाभ उठाने की चेष्टा करें। केवल पुराने ढंग से दूकानदारी करने, सूद पर रुपया लगाने या शहरों में विदेशी कंपनियों की दलाली करने से अब काम नहीं चल सकता। इनमें कुछ व्यवसाय तो ऐसे हैं जो हमारे लिए अब बिलकुल लाभदायक नहीं रह जाएँगे। उदाहरण के लिए सूद पर रुपया लगाने का व्यवसाय। किसानों की कर्जदारी और सूदखोरी के विरुद्ध कई प्रांतों में कानून बन चुके हैं और जहाँ नहीं बने हैं वहाँ भी शीघ्र बन जाने की संभावना है। इसलिए, यह व्यवसाय अब हमारे लिए लाभदायक नहीं रह जाएगा। किसान कृषि-प्रधान भारत के मेरुदंड स्वरूप हैं और हमारे देश के किसान जिस प्रकार कर्जदारी की चक्की में पिस रहे हैं, उनसे उनका जब तक उद्धार नहीं किया जाता तबतक देश की आर्थिक उन्नति संभव नहीं है। इस प्रश्न पर हमें देश की आर्थिक दृष्टि से ही विचार करना होगा। दूकानदारी का जो पुराना तरीका है, उसमें भी वांछनीय परिवर्तन करने की आवश्यकता है। ग्राहकों का ध्यान आकृष्ट करने, अपने माल को लोकप्रिय एवं आकर्षक बनाने के लिए हमें भी यथासंभव विज्ञान के नए-नए साधनों का प्रयोग करना पड़ेगा। व्यापार-कौशल की दृष्टि से हम आकर्षक साधनों एवं बाह्याडंबरों का सर्वथा परिहार नहीं कर सकते। इसके सिवा सबसे बढ़कर आवश्यकता तो इस बात की है कि नए-नए व्यवसाय एवं उद्योग-धंधों के संबंध में पूरी (up-to-date) जानकारी प्राप्त करके उनमें पूँजी लगाई जाय और उनका कौशल एवं कार्यक्षमता पूर्वक संचालन किया जाय जिससे देश की आर्थिक एवं व्यापारिक प्रगति में हम अपना उचित भाग ले सकें और साथ ही इसके, समाज तथा देश की बेकारी का प्रश्न भी अनेकांश में हल हो। इस प्रकार के कितने ही व्यवसाय हैं जिनकी ओर अबतक हमारा ध्यान बिलकुल गया ही नहीं। डाइरेक्टरियों से तथा सरकारी कॉमर्शियल म्यूजियम से आपको इस प्रकार के कितने ही नए-नए व्यवसायों और उद्योग-धंधों के संबंध में आवश्यक जानकारी प्राप्त हो सकती है। किंतु, हमने इस ओर बहुत कम ध्यान दिया है। घड़ी, छापाखाना, टाइप ढलाई, केमिकल आदि कितने ही व्यवसाय ऐसे हैं, जिनमें हमारा स्थान नहीं के बराबर है। इसके सिवा बीमा, जहाज आदि के व्यवसायों का क्षेत्र भी हमारे लिए अनेकांश में खाली पड़ा है। आयात-निर्यात वाणिज्य के संबंध में अबतक हम विदेशी कंपनियों के वेनियन के रूप में ही काम करते रहे हैं। किंतु, अब आवश्यकता इस बात की है कि विदेशों के साथ हमारा वाणिज्य-संबंध प्रत्यक्ष रूप से स्थापित हो। देश के विभिन्न भागों में कहाँ कौन चीजें उत्पन्न होती हैं, इसके संबंध में भी हमारी जानकारी होनी चाहिए जिससे उनका उपयोग तैयार माल के रूप में करने की संभावनाओं पर हम विचार कर सकें। क्या ही अच्छा हो कि नए-नए व्यवसाय और उद्योग-धंधों के संबंध में लोगों को आवश्यक जानकारी प्राप्त कराने के लिए Commercial Bureau जैसी कोई संस्था समाज की ओर से स्थापित हो जहाँ वाणिज्य-व्यवसाय के संबंध में आवश्यक ज्ञान प्राप्त करने के उपयुक्त सब प्रकार के साधन संग्रहित किए जाय। यह संस्था देश-विदेश के वाणिज्य-व्यवसाय के संबंध में सब प्रकार की सूचनाएँ और आँकड़ें संग्रह करें और अपनी उपयोगिता द्वारा व्यापारी समाज को यथेष्ट लाभ पहुँचाने की चेष्टा करें।

यह संतोष की बात है कि इधर समाज के धनी-मानी व्यक्तियों का ध्यान बड़े-बड़े व्यवसायों की ओर कुछ-कुछ आकृष्ट हुआ है और इसके फलस्वरूप चीनी, कपड़ा, लोहा, इस्पात आदि की मीलें और कल-कारखानें खुले हैं। इस प्रकार व्यवसायों में धन लगाकर ही हम देश की आर्थिक प्रगति में अपना उचित भाग ले सकते हैं, और देश के साथ-साथ समाज की श्रीवृद्धि में सहायक हो सकते हैं। किंतु, इन व्यवसायों में भी अवांछनीय प्रतियोगिता नहीं होनी चाहिए जिससे स्वयं भी हानि उठानी पड़े और दूसरों को भी हानिग्रस्त होना पड़े। होता क्या है कि जहाँ एक भाई कोई मील या कारखाना स्थापित करता है और उसे लाभ होने लगता है तो दूसरा भाई भी प्रलोभन के वश उसी स्थान में नई मील या कारखाना स्थापित करने की चेष्टा करेगा और फिर अपना-अपना माल बेचने के लिए दोनों में गला घोटूं प्रतियोगिता चलने लगेगी जिसका परिणाम दोनों ही के लिए नाशकारी सिद्ध होता है। इस संबंध में हमें यूरोपियन व्यापारियों से शिक्षा ग्रहण करनी होगी। आप देखेंगे कि जिस स्थान पर एक यूरोपियन कोई कल-कारखाना स्थापित करेगा वहीं उसके साथ प्रतियोगिता करने के लिए कोई दूसरा यूरोपियन नया कारखाना कदापि स्थापित नहीं करेगा। उनमें पारस्परिक संगठन इतना शक्तिशाली होता है कि वे आपस में अनुचित प्रतियोगिता करके एक-दूसरे को क्षतिग्रस्त करने की चेष्टा नहीं करते। आज बंगाल के पाट-व्यवसाय पर जो संकट उपस्थित हो रहा है उसका कारण भी यह अनुचित प्रतियोगिता ही है।

चीनी के व्यवसाय के संबंध में भी अभी से सतर्क रहने की आवश्यकता है। क्योंकि, जबतक हम अपने देश में चीनी की खपत बढ़ाने तथा देश के बाहर चीनी की खपत के लिए बाजार ढूढ़ने में समर्थ नहीं होंगे तबतक मीलों की संख्या में अंधाधुंध वृद्धि करके और चीनी की पैदावार बढ़ाकर हम देश के इस उन्नतिशील व्यवसाय को क्षतिग्रस्त किए बिना नहीं रह सकते।

(श्रोत : अ.भा.मा. सम्मेलन के अधिवेशन के अवसर पर प्रसारित 'वर्तमान युग और मारवाड़ी समाज')

आगे जारी...

जैव-घड़ी (बायो-क्लॉक)

अगर हमें बाहर जाना है या कुछ काम है तो हम घड़ी का अलार्म ४ बजे सुबह का लगा कर सो जाते हैं। पर कभी कभी हम अलार्म के पहले ही उठ जाते हैं; यही बायो-क्लॉक है। बहुत से लोग ये मानते है कि वो ८०-९० की उम्र में ऊपर जाएंगे। काफी लोग ये विश्वास करते हुए अपनी खुद की जैव-घड़ी (बायो-क्लॉक) दिमाग में उसी तरह से सेट कर लेते हैं कि ५०-६० की उम्र में सभी बीमारियां उन्हें घेर लेंगी। तभी लोग सामान्यत: ५०-६० की उम्र में बीमारियों से घिर जाते है और जल्दी भगवान को प्यारे हो जाते हैं। वास्तव में, हम अनजाने में अपनी गलत जैव-घड़ी (वायो-क्लॉक) सेट कर लेते है। चीन में लोग आराम से १०० साल तक जीते हैं। उनकी जैव-घड़ी (बायो-क्लॉक) उसी तरह सेट रहती है।

तो दोस्तों,

हम लोग अपनी जैव-घड़ी (बायो-क्लॉक) इस तरह सेटकरें, जिससे हम लोग कम से कम १०० सालों तक जी सकें।

याद रखिए, उम्र सिर्फ एक संख्या है, लेकिन 'बुढ़ापा' मानसिकता है। कुछ लोग ७५ साल की उम्र में युवा महसूस करते हैं, तो कुछ लोग ५० साल की उम्र में भी खुद को बूढ़ा महसूस करते हैं।

हमें ये विश्वास बनाना है कि हम ४० से ६० साल की उम्र में उन सभी बीमारियों से दूर हो चुकेंगे जो पहले भी कभी हुई हों, जिससे हमारी जैव-घड़ी (बायो-क्लॉक) बैसे ही सेट हो जाए और कोई रोग होने की संभावना नहीं रहे।

जवान दिखें अपनी वेशभूषा से, और दिखना युवा जैसा रखिए, उम्र बढ़ने का आभास न होने दें।

सक्रिय रहिए। चलने के बजाए 'जॉगिंग' कीजिए।

ये विश्वास बनाइए की उम्र के साथ हेल्थ बेहतर होगी। यह सत्य है।

हमारी मानसिकता ही हर चीज का कारण है। कभी भी जैव-घड़ी (बायो-क्लॉक) को अपना अंत निर्धारित करने की अनुमति न दें।

खुश रहिए, स्वस्थ रहिए!

व्रत करने के होते हैं क्या फायदे

कुछ लोग ये सोचकर व्रत रखते हैं कि इसी बहाने उनका वजन कम हो जाएगा, लेकिन कम ही लोगों को पता होगा कि व्रत करना सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है। आमतौर पर व्रत रखने का संबंध भगवान के प्रति श्रद्धा और भक्ति से जोड़ा जाता है। इनका सिर्फ धार्मिक महत्व ही नहीं है, बल्कि शारीरिक रूप से भी बहुत अधिक महत्व ह। व्रत करने से शरीर को कई प्रकार के लाभ होते हैं। व्रत रखने के फायदे की बात करें तो ये हमारे मन और मस्तिष्क को एकाग्र करने में मदद करता है, लेकिन क्या आप जानते हैं व्रत रखने से हम अपने शरीर को कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों से भी बचा सकते हैं।

कम कर सकते हैं वजन

व्रत करने का सबसे बड़ फायदा यह है कि इससे वजन कम कर सकत हैं। अगर आपकी तोंद निकली हुई है, व्रतों के दौरान वेट लॉस कर सकते हैं। दरअसल व्रत रखने से हमारे शरीर में मौजूद फैट एनर्जी में बदल जाता है, जिससे हमारा वजन कंट्रोल में रहता है। इसके अलावा व्रत के दौरान हम फास्ट फूड और जंक फूड जैसे चीजों से अपने को दूर बनाए रखते हैं, जो वेटलॉस में मददगार हो सकता है।

कंट्रोल में रहता है ब्लड प्रेशर

व्रत रखने से शरीर में मौजूद बैड कोलेस्ट्रॉल का लेवल कम होता है और ब्लड प्रेशर भी कंट्रोल में रहता है। जिसका सीधा असर हमारे दिल पर पड़ता है और हमारा दिल स्वस्थ रहता है।

पाचन तंत्र को आराम

शरीर के मेटाबॉल्जिम को मजबूत करने में व्रत रखना सबसे सरल तरीका माना जाता है, क्योंकि व्रत रखने से शरीर के पाचन तंत्र को आराम मिलता है। इससे पाचन तंत्र अपनी गति में सुधार ला पाता है और सुचारू रूप से काम कर पाता है।

डिप्रेशन और ब्रेन स्ट्रोक जैसे रोगों से बचाव

व्रत रखना मानसिक रूप से भी आपकी कार्यक्षमता बढ़ाने में मदद करता है। व्रत रखने से ब्रेन हार्मोन का उत्पादन बढ़ जाता है। जो मस्तिष्क में मौजूद स्टेम सेल कोशिकाओं को सक्रिय करती है और उन्हें न्यूरॉन्स में बदलने का काम करती है। जिससे डिप्रेशन, ब्रेन स्ट्रोक और अन्य मानसिक बीमारियों का खतरा कम हो जाता है।

नष्ट हो जाते हैं हानिकारक बैक्टीरिया

व्रत करने से शरीर में कुछ अच्छे बैक्टीरिया की वृद्धि होती है जो सिर्फ व्रत उपवास करने से ही उत्पन्न होते हैं। इसी तरह कुछ विशेष प्रकार के हानिकारक बैक्टिरिया के नष्ट होने की प्रक्रिया भी सिर्फ व्रत के समय ही होती है। व्रत उपवास करने से शरीर प्रकृति के अनुसार ढलने लगता है। स्वाभाविक रूप से भूख प्यास आदि लगने लगता है।

– डॉ. दर्शन बांगिया

।। ॐ श्रीपरमात्मने नमः।।

मदिरापान गौहत्या से भी बढ़कर महान भयंकर पाप है! कारण कि यह धार्मिक परमाणुओं का नाश करता है। मदिरापान भीतर के धार्मिक बीजों को भूँज देता है। मदिरा का पारमार्थिक बातों के साथ विरोध है। मदिरा पीने वाले की बुद्धि ठीक नहीं रहती.....नहीं रहती.....नहीं रहती !!

– परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

– 'यह कलियुग है' पुस्तक से

सोशल मीडिया पेज से जुड़ें

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सोशल मीडिया में उपस्थिति फेसबुक एवं इंस्टाग्राम पेज के माध्यम से प्रारंभ हो चुकी है। सभी समाज-बंधुओं से विनम्र निवेदन है कि फेसबुक व इंस्टाग्राम को अधिक से अधिक संख्या में लाइक/फॉलो करें। इसके द्वारा हम आपसी संवाद एवं संपर्क को बढ़ावा देंगे एवं इससे सम्मेलन की सूचनाओं का आदान-प्रदान भी संभव हो पाएगा। सम्मेलन के सभी प्रांत, शाखा एवं समाज से जुड़े सभी समाज-बंधुओं से अनुरोध है कि इस सुविधा का लाभ उठाएं तथा अपने सूचना/विचार एवं कार्यक्रम की फोटो पोस्ट करने के लिए राष्ट्रीय कार्यालय में व्हाट्सएप +91 86973 17557 करके या ईमेल (aimf1935@gmail.com) में भेज सकते हैं, ताकि उपयुक्त जानकारियों को हम एक-दूसरे के साथ साझा कर सकें। इस संबंध में आपके सुझाव आमंत्रित हैं। राम! राम!!

– कैलाश पति तोदी, राष्ट्रीय महामंत्री

आलेख

इंडिया बनाम भारत – झूठा महाभारत

– डॉ. दिनेश कुमार जैन
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अ.भा.मा.स.

गत माह देश के राजनीतिक पटल पर एक चर्चा तेजी से उभरी। भारत सरकार ने कुछ स्थानों मुख्यत: जी-२० बैठक में राष्ट्राध्यक्षों के लिए निमंत्रण, पर 'प्रेसिडेंट ऑफ भारत' शब्दावली का प्रयोग किया। इसे विपक्षी दलों से राजनीति से प्रेरित बताया, कुछ कि चूँकि हमने अपने गठबंधन का नाम 'I.N.D.I.A.' रखा है, मोदी सरकार इंडिया शब्द को संविधान से हटाने का प्रयास कर रही है। वहीं सरकार का तर्क था कि इंडिया और भारत दोनों ही देश के संविधान सम्मत आधिकारिक नाम हैं और 'भारत' शब्द के प्रयोग का विरोध देश की संस्कृति का विरोध है। अब प्रश्न यह है कि देश का नाम क्या हो, राजनीतिक हील-हवालों से परे, यह एक विचारणीय विषय अवश्य है।

पौराणिक पृष्ठभूमि: हमारे उपलब्ध ग्रंथों, जिन्हें सामान्यत: ३००० से १००० ईसा पूर्व का माना जाता है, के अनुसार हमारे देश के लिए भारत, भारतवर्ष, जम्बूद्वीप, आर्यावर्त, अजनाभवर्ष आदि नामों का प्रयोग हुआ है – प्रमुखत: 'भारत' का। कुछ दृष्टांत हैं :

शकुन्तलायां दुष्यन्ताद् भरतश्चापि जज्ञिवान्।
यस्य लोकेषु नाम्नेदं प्रथितं भारतं कुलम्।।

(महाभारत, आदिपर्व, दूसरा अध्याय, ९६वाँ श्लोक)

उत्तरं यत समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।।

(विष्णु पुराण, दूसरा खंड, तीसरा अध्याय, पहला श्लोक)

गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गस्पिदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरूषा पुरत्वात्।।

(विष्णु पुराण, दूसरा खंड, तीसरा अध्याय, २४वाँ श्लोक)

पौराणिक ग्रंथों में अनेक दृष्टांत उपलब्ध हैं, तथापि इनमें स्वाभाविक मत विविधता भी है। शकुंतला और दुष्यंत के पुत्र भरत के नाम पर भारत का होना सबसे प्रचलित है, किंतु भरत नाम के अन्य लोगों का भी वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त ऋग्वेद में भारत नाम के कबीले का वर्णन मिलता है जिसके राजा सुदास ने दस अन्य कबीलों को हराकर एक बड़े भू-भाग पर भारत राज्य की स्थापना की।

जैन परंपरा के अंतर्गत भी देश का नाम 'भारत' रखे जाने के सूत्र मिलते हैं। स्कंद पुराण के ३७वें अध्याय में नाभिराज के पुत्र और जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के पुत्र भरत चक्रवर्ती के भी नाम पर 'भारतवर्ष' नामकरण का वर्णन है।

विदेशी संदर्भ: वैदिक युग के बाद के वर्षों में हिंद, हिंदू, हिंदुस्तान (फारसी), अल-हिंद (अरबी); हिंदूश (यूनानी); ग्यागर और फग्युल या फाग्युल (तिब्बत); तियांजु जुआंदु, येंदु और होडू (चीनी) शब्दों के प्रयोग का जिक्र मिलता है। इन देशों से हमारा व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान बहुत पुराना है। तब फारसी भाषा में 'स' का उच्चारण नहीं होता था, इसलिए 'सिंधु' बदल कर 'हिंदू' हो गया (एक और उदाहरण–'सप्ताह' से 'हफ्ता')। यूनानियों (वर्तमान ग्रीस) ने फारसियों से सिंधु नदी के पार के इलाके को 'हिंद' जाना। यूनानियों की भाषा में 'ह' की ध्वनि नहीं होती थी (साइलेंट) तो उन्होंने 'हिंद' को बना दिया 'इंड'।

'इंडिया' शब्द का प्रयोग: ईसा पूर्व पाँचवी सदी से यूनानी इतिहासकार **हेरोडोटस** (ईसा पूर्व ४८४–४२५) एवं **मेगस्थनीज** (ईसा पूर्व ३५०–२९०) ने इंडो/इंडोई शब्दों का प्रयोग किया। प्रकारांतर में इसी से 'इंडस' और 'इंडिया' जैसे शब्द प्रयोग में आए। मेगस्थनीज ने तो भारत की यात्रा भी की और 'इंडिका' नाम की पुस्तक लिखी।

इतिहासकारों का मानना है कि नौवीं शताब्दी तक अन्य यूरोपीय भाषाओं में भी इंडिया शब्द का प्रयोग होने लगा। पहले इंडी/इंदोई, इंडस या इंडिया, इन शब्दों का प्रयोग निवासियों के लिए होता था, किंतु बाद में इंडिया शब्द भौगोलिक भू-भाग के लिए प्रयोग मे आया। इतिहासकार इयान जे. बैरो के आलेख 'Naming Change in Changing Names' में लिखा है कि इंडिया शब्द का प्रयोग १८वीं शताब्दी से पूरी तरह प्रचलित हो गया।

भारतीय संविधान : ०४ नवंबर १९४८ को संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अंबेडकर ने जब पहला मसौदा प्रस्तुत किया तो इसमें 'भारत' शब्द कहीं नहीं था, यह आश्चर्यजनक था और संविधान सभा के कई सदस्यों ने इस पर घोर आपत्ति जताई। पुन: इस विषय पर १७ सितंबर १९४९ को बहस हुई। बहस में भाग लेते हुए सेठ गोविंददास मालपानी, कमलापति त्रिपाठी, राम सहाय, हरगोविंद पंत, हरि विष्णु कामत, कल्लूर सुब्बा राव, मुहम्मद ताहिर आदि ने पहले मसौदे पर आपत्ति जताई और परिवर्तन हेतु प्रस्ताव दिए। सेठ गोविंद दास का प्रस्ताव था – भारत जो विदेशों में इंडिया के नाम से जाना जाता है। उन्होंने कहा कि इंडिया न तो प्राचीन शब्द है और न भारतीय संस्कृति से निकला है, जबकि भारत शब्द हमारी संस्कृति के मूल में है। उल्लेखनीय है कि सेठ गोविंद दास मालपानी ने १९५४ से १९६२ के बीच दो सत्रों तक, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद को सुशोभित किया और मारवाड़ी समाज को नेतृत्व प्रदान किया।

अंतत: तय हुआ कि संविधान में भारतीय संस्कृति, भारतीय भाषाओं में लिखे इतिहास, धार्मिक ग्रंथों, लोगों की आस्थाओं, जुड़ावों, भावनाओं का मान रखते हुए भारत शब्द को उसका सम्मान दिया गया और निर्णय स्वरूप लिखा गया – **इंडिया, दैट इज भारत**।

मेरा मत है कि वर्तमान में दोनों शब्दों 'इंडिया' और 'भारत' का व्यापक प्रयोग हो रहा है। निस्संदेह 'भारत' हमारी मूल संस्कृति का हिस्सा है और शिरोधार्य है। हमारे राष्ट्रगान में भी मात्र भारत शब्द का उल्लेख है। वहीं 'इंडिया' पिछले कई सदियों के हमारे इतिहास से जुड़ा हुआ है और वैश्विक स्तर पर अपनी एक ब्रांड-वैल्यू बन चुका है। हाँ, इसके विरूद्ध सांस्कृतिक एवं मानसिक पराधीनता को इंगित करने का तर्क अवश्य है। तथापि, संविधान में परिवर्तन या कोई भी दूरगामी कदम उठाने के पूर्व हमें राष्ट्र-स्तर पर विमर्श करना चाहिए। इस विषय से जुड़े सभी पहलुओं का आंकलन कर, योजनाबद्ध ढंग से क्रमिक कदम उठाने चाहिए। राजनीतिक दलों को भी अपने तात्कालिक हितों से ऊपर उठकर भागीदारी निभाना तथा सकारात्मक योगदान देना चाहिए। परिणति तो भविष्य के गर्भ में है, किंतु इस विषय पर चर्चा शुरू हुई है, जो सुखद है और हमारी कामना है कि इसका सर्वसम्मत निराकरण हो जो हमारी राष्ट्रीय गरिमा को और ऊँचाइयाँ प्रदान करे।

३२५ तरह से साड़ी बाँधने का विश्व रिकार्ड

कभी खुद साड़ी पहनने से नफरत करने वाली डॉली जैन ने सुपरस्टार श्रीदेवी के कहने पर साड़ी पहनाने को अपना पेशा बनाया और आज वो हर बड़ी अभिनेत्री की पसंदीदा हैं। डॉली की ग्राहक सूची में दीपिका, आलिया से लेकर नयनतारा तक कई बड़ी अभिनेत्रियाँ शामिल हैं। अंबानी के घर में शादी हो या किसी फिल्म स्टार की, दुल्हन को साड़ी पहनाने का काम इनका ही होता है। डॉली ३२५ तरह की साड़ी बाँधना जानती हैं, ये विश्व रिकॉर्ड उनके नाम दर्ज है। एक और विश्व रिकॉर्ड भी है, मात्र १८.५ सेकेंड्स में साड़ी पहनाने का।

मारवाड़ी महिलाएं कर रहीं पिंडदानियों की सेवा

पितृपक्ष मेले में लाखों पिंडदानियों की सेवा में दर्जनों शिविर लगे हैं। इनमें एक शिविर ऐसा है जहाँ मारवाड़ी परिवार की महिलाएँ तन, मन और धन के साथ निःस्वार्थ भाव से पिंडदानियों की सेवा में लगी हैं। अतिथि देवो भवः को आत्मसात कर रही हैं। बेहद संपन्न घर की २० से अधिक महिलाएँ प्रतिदिन सुबह सात बजे से लेकर दोपहर दो बजे तक हजारों तीर्थयात्रियों की सेवा में जुटी हैं। पिछले १२ सालों से महिलाओं का यह शिविर इस बार भी मेले का आकर्षण बना है।

विष्णुपद के बैजनाथ मंदिर के पास यह शिविर लगा है। सभी आर्थिक रूप से बेहद संपन्न करीब २० महिलाएं सेवा में जुट ी हैं। अहले सुबह ४ बजे उठने के बाद महिलाए घर का जरूर काम निपटाने के बाद शिविर पहुँच जा रही है। शिविर में आकर कुछ चाय बनाती हैं तो कुछ चाय देती है। कुछ बस्कुटदेती हैं कुछ पानी पिला रही हैं। श्रीमती सीमा अग्रवाल, श्रीमती अंजू अग्रवाल, श्रीमती प्रमिला अग्रवाल, श्रीमती शशि अग्रवाल, श्रीमती कविता अग्रवाल व श्रीमती अर्चना अग्रवाल ने बताया कि करीब आठ घंटे लगातार खड़ा रहना पड़ रहा है। लेकिन, पिंडदानियों की सेवा के आगे कोई कष्ट बड़ा नहीं। श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल, श्री शिव प्रसाद अग्रवाल ने बताया कि प्रतिदिन हजारों कप चाय, ७० जार शुद्ध पानी और ३० पेटी बिस्कुट की खपत हो रही है। संघ के प्रदेश अध्यक्ष श्री प्रमोद अग्रवाल, उपाध्यक्ष श्रीमती कंचन अग्रवाल भी सेवा के साथ महिलाओं का हौसला बढ़ा चुकी हैं।

चार्वी मेहता करेंगी भारत का नेतृत्व

उज्जैन की चार्वी मेहता शतरंज में एशियन खेलों में भारत की महिला टीम का नेतृत्व करेंगी। शतरंज खेल २२ अक्तूबर से चीन के हांगझोऊ शहर में खेले जाएंगे, जिसके लिए पैरा ओलिंपिक कमेटी ऑफ इंडिया ने शुक्रवार को भारतीय शतरंज ट ीम की घोषणा की। महिला टीम में मध्यप्रदेश की चार्वी मेहता के अतिरिक्त तमिलनाडु की राजू प्रेमा कनिश्री और शेरोन रचेल अभय हैं। उज्जयिनी शतरंज संघ के अध्यक्ष संदीप कुलश्रेष्ठ और सचिव महावीर जैन ने बताया कि केंद्रीय विद्यालय में कक्षा ८वीं में अध्ययनरत चार्वी आशीष मेहता शहर की पहली खिलाड़ी हैं, जो एशियन गेम्स में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी। इससे पूर्व भी चार्वी राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में कई पदक प्राप्त करने के साथ ही तृतीय फिजिकली चैलेंज्ड राष्ट्रीय चैस चैंपियनशिप में महिला वर्ग में राष्ट्रीय विजेता होने का गौरव प्राप्त कर शहर को गौरवान्वित कर चुकी हैं।

अनुष अग्रवाल को घुड़सवारी में गोल्ड

कोलकाता के रहने वाले इंडिया टीम के श्री अनुष अग्रवाल ने एशियाई खेल में घुड़सवारी में गोल्ड मेडल जीता है। इसमें चार खिलाड़ी थे। चारों खिलाड़ी में श्री अनुष अग्रवाल और उसके घोड़े 'एतरो' ने सबसे अधिक ७१.००८८ प्वाइंट हासिल किया। एक तरह से अनुष के बेहतरीन प्रदर्शन के कारण ही यह स्वर्ण पदक संभव हो पाया। इसके पहले भारत ने १९८६ के एशियाई खेल में स्वर्ण पदक जीता था। प्रतियोगिता के बाद अनुष ने कहा कि अब मेरी नजर २०२४ में होने वाली पेरिस ओलंपिक पर है। अनुष का ट्रेनर जर्मनी के हैबर्ट्स स्मिथ ने कहा कि कोलकाता के युवा अनुष ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है। उसने घुड़सवारी में बेहतरीन शक्ति और सामंजस्य का प्रदर्शन किया है। श्री अग्रवाल की माँ श्रीमती प्रीति अग्रवाल ने कहा कि हमें उस पर गर्व है। उसने जर्मनी में बिना विश्राम किए जी-तोड़ अभ्यास किया था।

प्रेरक कहानी

क्यूं जरूरी है घर में बड़े बुजुर्गों की उपस्थिति, एक मार्मिक गाथा

बच्चों को स्कूल बस में बैठाकर वापस आ शालू खिन्न मन से टैरेस पर जाकर बैठ गई।

शालू की इधर-उधर दौड़ती सरसरी नजरें थोड़ी दूर एक पेड़ की ओट में खड़ी बुढ़िया पर ठहर गई।

'ओह! फिर वही बुढ़िया, क्यों इस तरह से उसके घर की ओर ताकती है?' शालू की उदासी बैचैनी में तब्दील हो गई, मन में शंकाएं पनपने लगीं, इससे पहले भी शालू उस बुढ़िया को तीन-चार बार नोटिस कर चुकी थी। दो महीने हो गए थे शालू को पूना से गुड़गांव शिफ्ट हुए, मगर अभी तक एडजस्ट नहीं हो पाई थी।

सब कुछ कितना सुव्यवस्थित चल रहा था पूना में। उसकी अच्छी जॉब थी। घर संभालने के लिए अच्छी मेड थी, जिसके भरोसे वह घर और रसोई छोड़कर सुकून से ऑफिस चली जाती थी।

घर के पास ही बच्चों के लिए एक अच्छा-सा डे-केयर भी था। स्कूल के बाद दोनों बच्चे शाम को उसके ऑफिस से लौटने तक वहीं रहते। लाइफ बिलकुल सेट थी, मगर सुधीर के एक तबादले की वजह से सब गड़बड़ हो गया।

दो दिन बाद सुधीर टूर से वापस आए, तो शालू ने उस बुढ़िया के बारे में बताया। सुधीर को भी कुछ चिंता हुई, "ठीक है, अगली बार कुछ ऐसा हो, तो वॉचमैन को बोलना वो उसका ध्यान रखेगा, वरना फिर देखते हैं, पुलिस कम्प्लेन कर सकते हैं।" कुछ दिन ऐसे ही गुजर गए।

शालू का घर को दोबारा ढर्रे पर लाकर नौकरी करने का संघर्ष जारी था, पर इससे बाहर आने की कोई सूरत नजर नहीं आ रही थी।

एक दिन सुबह शालू ने टैरेस से देखा, वॉचमैन उस बुढ़िया के साथ उनके मेन गेट पर आया हुआ था। सुधीर उससे कुछ बात कर रहे थे। पास से देखने पर उस बुढ़िया की सूरत कुछ जानी पहचानी-सी लग रही थी। शालू को लगा उसने यह चेहरा कहीं और भी देखा है, मगर कुछ याद नहीं आ रहा था।

बात करके सुधीर घर के अंदर आ गए और वह बुढ़िया मेन गेट पर ही खड़ी रही।

"अरे, ये तो वही बुढ़िया है, जिसके बारे में मैंने आपको बताया था। ये यहाँ क्यों आई है?" शालू ने चिंतित स्वर में सुधीर से पूछा। "बताऊँगा तो आश्चर्यचकित रह जाओगी। जैसा तुम उसके बारे में सोच रही थी, वैसा कुछ भी नहीं है। जानती हो वो कौन है?"

शालू का विस्मित चेहरा आगे की बात सुनने को बेकरार था। "वो इस घर की पुरानी मालकिन हैं।"

"क्या? मगर ये घर तो हमने मिस्टर शांतनु से खरीदा है।"

"ये लाचार बेबस बुढ़िया उसी शांतनु की अभागी माँ है, जिसने पहले धोखे से सब कुछ अपने नाम करा लिया और फिर ये घर हमें बेचकर विदेश चला गया, अपनी बूढ़ी माँ गायत्री देवी को एक वृद्धाश्रम में छोड़कर।

छी... कितना कमीना इंसान है, देखने में तो बड़ा शरीफ लग रहा था।"

सुधीर का चेहरा वितृष्णा से भर उठा। वहीं शालू याद्दाश्त पर कुछ जोर डाल रही थी।

"हाँ, याद आया, स्टोर रूम की सफाई करते हुए इस घर की पुरानी नेमप्लेट दिखी थी। उस पर 'गायत्री निवास' लिखा था, वहीं एक राजसी ठाठ-बाटवाली महिला की एक पुरानी फोटो भी थी। उसका चेहरा ही इस बुढ़िया से मिलता था, तभी मुझे लगा था कि इसे कहीं देखा है, मगर अब ये यहाँ क्यों आई हैं? क्या घर वापस लेने? पर हमने तो इसे पूरी कीमत देकर खरीदा है।" शालू चिंतित हो उठी।

"नहीं, नहीं। आज इनके पति की पहली बरसी है। ये उस कमरे में दीया जलाकर प्रार्थना करना चाहती हैं, जहाँ उन्होंने अंतिम सांस ली थी।" "इससे क्या होगा, मुझे तो इन बातों में कोई विश्वास नहीं।"

"तुम्हें न सही, उन्हें तो है और अगर हमारी हाँ से उन्हें थोड़ी-सी खुशी मिल जाती है, तो हमारा क्या घट जाएगा?" "ठीक है, आप उन्हें बुला लीजिए।" अनमने मन से ही सही, मगर शालू ने हाँ कर दी।

गायत्री देवी अंदर आ गई। क्षीण काया, तन पर पुरानी सूती धोती, बड़ी-बड़ी आँखों के कोरों में कुछ जमे, कुछ पिघले से आँसू। अंदर आकर उन्होंने सुधीर और शालू को ढेरों आशीर्वाद दिए।

नजरें भर-भरकर उस पराये घर को देख रही थीं, जो कभी उनका अपना था। आँखों में कितनी स्मृतियाँ, कितने सुख और कितने ही दुख एक साथ तैर आए थे।

वो ऊपर वाले कमरे में गईं। कुछ देर आँखें बंद कर बैठी रहीं। बंद आँखें लगातार रिस रही थीं।

फिर उन्होंने दीया जलाया, प्रार्थना की और फिर वापस से दोनों को आशीर्वाद देते हुए कहने लगीं, "मैं इस घर में दुल्हन बनकर आई थी। सोचा था, अर्थी पर ही जाऊँगी, मगर..." स्वर भर्रा आया था।

"यही कमरा था मेरा। कितने साल हँसी-खुशी बिताए हैं यहाँ अपनों के साथ, मगर शांतनु के पिता के जाते ही..." आँखें पुनः भर आईं।

शालू और सुधीर निःशब्द बैठे रहे। थोड़ी देर घर से जुड़ी बातें कर गायत्री देवी भारी कदमों से उठीं और चलने लगीं।

पैर जैसे इस घर की चौखट छोड़ने को तैयार ही न थे, पर जाना तो था ही। उनकी इस हालत को वो दोनों भी महसूस कर रहे थे।

"आप जरा बैठिए, मैं अभी आती हूँ।" शालू गायत्री देवी को रोककर कमरे से बाहर चली गई और इशारे से सुधीर को भी बाहर बुलाकर कहने लगी, "सुनिए, मुझे एक बड़ा अच्छा आइडिया आया है, जिससे हमारी लाइफ भी सुधर जाएगी और इनके टूटे दिल को भी आराम मिल जाएगा। क्यों न हम इन्हें यहीं रख लें?

अकेली हैं, बेसहारा हैं और इस घर में इनकी जान बसी है। यहाँ से कहीं जाएँगी भी नहीं और हम यहाँ वृद्धाश्रम से अच्छा ही खाने-पहनने को देंगे उन्हें।"

"तुम्हारा मतलब है, नौकर की तरह?" "नहीं, नहीं। नौकर की तरह नहीं हम इन्हें कोई तनख्वाह नहीं देंगे।

काम के लिए तो मेड भी है। बस, ये घर पर रहेंगी, तो घर के आदमी की तरह मेड पर, आने-जाने वालों पर नजर रख सकेंगी। बच्चों को देख-संभाल सकेंगी।

ये घर पर रहेंगी, तो मैं भी आराम से नौकरी पर जा सकूँगी। मुझे भी पीछे से घर की, बच्चों के खाने-पीने की टेंशन नहीं रहेगी।"

"आइडिया तो अच्छा है, पर क्या ये मान जाएँगी?" "क्यों नहीं। हम इन्हें उस घर में रहने का मौका दे रहे हैं, जिसमें उनके प्राण बसे हैं, जिसे ये छुप-छुपकर देखा करती हैं।"

"और आगर कहीं मालकिन बन घर पर अपना हक जमीने लगीं तो?" "तो क्या, निकाल बाहर करेंगे, घर तो हमारे नाम ही है। ये बुढ़िया क्या कर सकती है।" "ठीक है, तुम बात करके देखो।" सुधीर ने सहमति जताई।

शालू ने सम्हल कर बोलना शुरू किया, "देखिए, अगर आप चाहें, तो यहाँ रह सकती हैं।"

बुढ़िया की आँखें इस अप्रत्याशित प्रस्ताव से चमक उठीं। क्या वाकई वो इस घर में रह सकती हैं, लेकिन फिर बुझ गईं।

आज के जमाने में जहाँ सगे बेटे ने ही उन्हें घर से यह कहते हुए बेदखल कर दिया कि अकेले बड़े घर में रहने से अच्छा उनके लिए वृद्धाश्रम में रहना होगा। वहाँ ये पराये लोग उसे बिना किसी स्वार्थ के क्यों रखेंगे?

"नहीं, नहीं। आपको नाहक ही परेशानी होगी।" "परेशानी कैसी, इतना बड़ा घर है और आपके रहने से हमें भी आराम हो जाएगा।"

हालाँकि दुनियादारी के कटु अनुभवों से गुजर चुकी गायत्री देवी शालू की आँखों में छिपी मंशा समझ गईं, मगर उस घर में रहने के मोह में वो मना न कर सकीं।

गायत्री देवी उनके साथ रहने आ गईं और आते ही उनके सधे हुए अनुभवी हाथों ने घर की जिम्मेदारी बखूबी सम्हाल ली।

सभी उन्हें अम्मा कहकर ही बुलाते। हर काम उनकी निगरानी में सुचारु रूप से चलने लगा।

घर की जिम्मेदारी से बेफिक्र होकर शालू ने भी नौकरी ज्वॉइन कर ली। सालभर कैसे बीत गया, पता ही नहीं चला।

अम्मा सुबह दोनों बच्चों को उठातीं, तैयार करतीं, मान-मनुहार कर खिलातीं और स्कूल बस तक छोड़तीं। फिर किसी कुशल प्रबंधक की तरह अपनी देखरेख में बाई से सारा काम करातीं। रसोई का वो स्वयं खास ध्यान रखने लगीं।

खासकर बच्चों के स्कूल से आने के वक्त वो नित नए स्वादिष्ट और पौष्टिक व्यंजन तैयार कर देतीं।

शालू भी हैरान थी कि जो बच्चे चिप्स और पिज्जा के अलावा कुछ भी मन से न खाते थे, वे उनके बनाए व्यंजन खुशी-खुशी खाने लगे थे।

बच्चे अम्मा से बेहद घुल-मिल गए थे। उनकी कहानियों के लालच में कभी देर तक टीवी से चिपके रहने वाले बच्चे उनकी हर बात मानने लगे। समय से खाना-पीना और होमवर्क निपटाकर बिस्तर में पहुँच जाते।

अम्मा अपनी कहानियों से बच्चों में एक ओर जहाँ अच्छे संस्कार डाल रही थीं, वहीं हर वक्त टीवी देखने की बुरी आदत से भी दूर ले जा रही थीं। शालू और सुधीर बच्चों में आए सुखद परिवर्तन को देखकर अभिभूत थे, क्योंकि उन दोनों के पास तो कभी बच्चों के पास बैठ बातें करने का भी समय नहीं होता था।

पहली बार शालू ने महसूस किया कि घर में किसी बड़े-बुजुर्ग की उपस्थिति, नानी-दादी का प्यार, बच्चों पर कितना सकारात्मक प्रभाव डालता है। उसके बच्चे तो शुरू से ही इस सुख से वंचित रहे, क्योंकि उनके जन्म से पहले ही उनकी नानी और दादी दोनों गुजर चुकी थीं।

आज शालू का जन्मदिन था। सुधीर और शालू ने ऑफिस से थोड़ा जल्दी निकलकर बाहर डिनर करने का प्लान बनाया था। सोचा था, बच्चों को अम्मा सम्हाल लेंगी, मगर घर में घुसते ही दोनों हैरान रह गए। बच्चों ने घर को गुब्बारों और झालरों से सजाया हुआ था।

वहीं अम्मा ने शालू की मन पसंद डिशेज और केक बनाए हुए थे। इस सरप्राइज बर्थडे पार्टी, बच्चों के उत्साह और अम्मा की मेहनत से शालू अभिभूत हो उठी और उसकी आँखें भर आईं।

इस तरह के वीआईपी ट्रीटमेंट की उसे आदत नहीं थी और इससे पहले बच्चों ने कभी उसके लिए ऐसा कुछ खास किया भी नहीं था।

बच्चे दौड़कर शालू के पास आ गए और जन्मदिन की बधाई देते हुए पूछा, "आपको हमारा सरप्राइज कैसा लगा?"

"बहुत अच्छा, इतना अच्छा, इतना अच्छा... कि क्या बताउँ..." कहते हुए उसने बच्चों को बाँहों में भरकर चूम लिया।

"हमें पता था आपको अच्छा लगेगा। अम्मा ने बताया कि बच्चों द्वारा किया गया छोटा-सा प्रयास भी मम्मी-पापा को बहुत बड़ी खुशी देता है, इसीलिए हमने आपको खुशी देने के लिए ये सब किया।"

शालू की आँखों में अम्मा के लिए कृतज्ञता छा गई। बच्चों से ऐसा सुख तो उसे पहली बार ही मिला था और वो भी उन्हीं के संस्कारों के कारण केक कटने के बाद गायत्री देवी ने अपने पल्लू में बँधी लाल रुमाल में लिपटी एक चीज निकाली और शालू की ओर बढ़ा दी।

"ये क्या है अम्मा?" "तुम्हारे जन्मदिन का उपहार।" शालू ने खोलकर देखा तो रुमाल में सोने की चेन थी।

वो चौंक पड़ी, "ये तो सोने की मालूम होती है।"

"हाँ बेटी, सोने की ही है। बहुत मन था कि तुम्हारे जन्मदिन पर तुम्हें कोई तोहफा दूँ। कुछ और तो नहीं है मेरे पास, बस यही एक चेन है, जिसे सम्हालकर रखा था। मैं अब इसका क्या करूँगी। तुम पहनना, तुम पर बहुत अच्छी लगेगी।"

शालू की अंतरात्मा उसे कचोटने लगी। जिसे उसने लाचार बुढ़िया समझकर स्वार्थ से तत्पर हो अपने यहाँ आश्रय दिया, उनका इतना बड़ा दिल कि अपने पास बचे एकलौते स्वर्णधन को भी वह उसे सहज ही दे रही हैं।

"नहीं, नहीं अम्मा, मैं इसे नहीं ले सकती।"

"ले-ले बेटी, एक माँ का आशीर्वाद समझकर रख ले। मेरी तो उम्र भी हो चली। क्या पता तेरे अगले जन्मदिन पर तुझे कुछ देने के लिए मैं रहूँ भी या नहीं।"

"नहीं अम्मा, ऐसा मत करिए। ईश्वर आपका साया हमारे सिर पर सदा बनाए रखे।" कहकर शालू उनसे ऐसे लिपट गई, जैसे बरसों बाद कोई बिछड़ी बेटी अपनी माँ से मिल रही हो।

वो जन्मदिन शालू कभी नहीं भूली, क्योंकि उसे उस दिन एक बेशकीमती उपहार मिला था, जिसकी कीमत कुछ लोग बिलकुल नहीं समझते और वो है निःस्वार्थ मानवीय भावनाओं से भरा माँ का प्यार। वो जन्मदिन गायत्री देवी भी नहीं भूलीं, क्योंकि उस दिन उनकी उस घर में पुनर्प्रतिष्ठा हुई थी।

घर की बड़ी, आदरणीय, एक माँ के रूप में, जिसकी गवाही उस घर के बाहर लगाई गई वो पुरानी नेमप्लेट भी दे रही थी, जिस पर लिखा था – 'गायत्री निवास'।

यदि इस कहानी को पढ़कर आपकी थोड़ी सी भी आँखे नम हो गई हो तो अकेले में २ मिनट चिंतन करें कि पाश्चात्य संस्कृति की होड़ में हम अपनी मूल संस्कृति को भुलाकर, बच्चों की उच्च शिक्षा पर तो सभी का ध्यान केंद्रित हैं किन्तु उन्हें संस्कारवान बनाने में हम पिछड़ते जा रहे हैं।

AUM CAPITAL
YOUR TRUST IS OUR WEALTH
Your
ONE STOP
SOLUTION
for all
Financial services
PARTNER WITH US
RISK
MEDIUM
LOW
HIGH
No Risk
Partner for your own location
Continous Support
Not much cost involved
Join us for exciting career opportunities
REACH US AT
aumcares@aumcap.com
New Delhi | Mumbai | Pune | Kolkata | Ranchi | Bangalore | Chennai
www.aumcap.com
9007632552
/ AumCap

Rungta Office, Nagar Parishad Complex, Chaibasa, Jharkhand- 833201
Email - tmtsales@rungtasteel.com

CENTURYPLY®

CENTURYPLY®

CENTURYLAMINATES®

CENTURYVENEERS®

CENTURYDOORS®

CENTURYEXTERIA®
Decorative Exterior Laminates

CENTURYPVC®

CENTURYPARTICLEBOARD®
The Eco-friendly and Economical Board

CENTURYPROWUD®
*MDF-The **wood** of the future*

zykron
FIBRE CEMENT BOARDS & PLANKS

SAINIK 710
WATERPROOF PLY

SAINIK LAMINATES™
BOLD & BEAUTIFUL

CENTURY PLYBOARDS (INDIA) LTD.

Century House, P-15/1, Taratala Road, Kolkata - 700 088

For any queries, SMS 'CPIL' to 56070 or call us on **1800 5722 122**

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2021-2023
Date of Publication - 26th October 2023
RNI Regd. No. 2866/1968

#LiveColors

COLORS BY RUPA

Bring on the Fun with
PRINTED
BRIEFS & TRUNKS

SOFT TOUCH | BREATHABLE FABRIC | QUICK ABSORPTION | ANTI-FUNGAL DYE | TAGLESS COMFORT | SUPER STRETCHABLE | ULTRA DURABLE | SNUG FIT

Colorful. Comfy. Cool. Presenting **Colors Printed Briefs & Trunks**, flaunt the shades of versatility coz there's a print for every mood & occasion. Combined with its superior support, as well as lasting freshness - you'll stay relaxed and stylish, all day!

Other available products

SCAN & EXPLORE

VEST #201 #202 #203 #204 #205 #206 #207 #208 #209 #210 #211 #212 #213 #214 #215
BRIEF #106 #107 #109 #111 #116 #117 #118 #126
TRUNK #101 #102 #103 #104 #105 #108 #110 #112 #113 #114 #115 #119 #120 #121 #122 #123 #124 #125
TOWEL #301 #302 #303 #401 #402 #501 | HANDKERCHIEF #701 #702 #703 #704 #705

Pictures shown are for illustration purpose only. Actual product may vary due to product enhancement. #Product codes.

live colors

Toll Free No.: **1800 1235 001** | Visit your nearest store or shop @ **rupaonlinestore.com** | **livecolors.in** | amazon.in

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com